।। ॐ श्री साईनाथाय नमः ।।
।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ।।

प्रेरणा – 2 (प्रतिमा)

गुरूबंधूभगिनीयों से,

वं. दादा जी ने जगत्कल्याण के प्रति स्थापन किए हुए इस कार्य की सिद्धता के अनुसार, आने वाले भक्त की स्थिति गुरूकृपा से जिस प्रकार बदलती जाती है, उस प्रकार गुरूशक्ति अपनी अवस्था बदलती रहती है। मतलब आने वाला भक्त जब नित्य उपासना और योग्य आचरण करने की कोशिश करके अपने प्राप्त हुए जीवन के प्रति सोचने लगता है तब वही प्रतिमाएँ अपनी गुरूशक्ति की अवस्था बदलकर उस भक्त को अगली उन्नत अवस्था प्राप्त कराने के लिए ॐकार साधना, आरती साधना और मुलाकात साधना के माध्यम द्वारा भक्त को गुरूशक्ति की आगे की अवस्था का लाभ प्रदान करती रहती है।

प्राथमिक अवस्था में चार प्रतिमाएँ, ज्ञान, भक्ति, सेवा और जीवन उन्नति का लाभ, आने वाले भक्त को प्रदान करती है, जिससे वह भक्त गुरू के पास सेवक अवस्था प्राप्त कर पाता है। श्री गुरू से प्राप्त हुई इस अनमोल अवस्था की पहचान कर लेना और उसके काबिल बनने की कोशिश अखंड स्वरूप में करते रहना यह सेवक का आज का कर्त्तव्य है। यही **अवधान** आज सेवक को **चिन्तन** के साथ रखना है।

जिस प्रकार किसी राजा का सेवक होता है, वह सिर्फ उस राजा की आज्ञानुसार अपना बर्ताव करता रहता है, वह सेवक अपनी खुद की बुद्धि का उपयोग नहीं करता, राजा की आज्ञा का पालन करना यही उस सेवक का कर्तव्य होता है। उसी प्रकार हम सभी परम पूज्यनीय बाबा, श्री सद्गुरूनाथ दादा और अन्य सभी दिव्य पूज्य विभूतियों के सेवक है और उनकी आज्ञानुसार हमारा आचरण होना अत्यंत आवश्यक है। उनकी आज्ञा मतलब परमार्थ प्रश्नावली। क्या आज हम सब परमार्थ प्रश्नावली के अनुसार योग्य आचरण करने की कोशिश कर रहे है?यदि ऐसा हो रहा है और इसके साथ हम नित्य उपासना कर रहे है, **तो ही हम सेवक अवस्था धारण कर सकते है।** श्री गुरू ने उसके आगे की अवस्थाएँ भी हमारे लिए सिद्ध कर रखी है और जिस प्रकार हमारा विकास होता जाएगा वैसे वैसे वे अवस्थाएँ हम में धारण होता जाएगा।

साधक की अगली अवस्था के लिए नीचे दी हुई चार प्रतिमाएँ अपना नया स्वरूप कार्यान्वित करती रहती है।

	पहला स्वरूप	**नया स्वरूप**
श्री साईशक प्रतिमा	– ज्ञान	कर्म यज्ञ
श्री कारण प्रतिमा	– भक्ति	ज्ञान यज्ञ
श्री महाकारण प्रतिमा	– सेवा	धर्म यज्ञ
श्री नारायणी प्रतिमा	– जीवन सार्थक होना	मानवता

इन अवस्थाओं का लाभ साधक को हो, इसलिए श्री गुरू साधक की अवस्था का स्थित्यंतर करके उसे प्रतिभा (Pratibha) बनाते है। जैसे जब धातु की प्रतिमा बाजार से बनवाकर लाते हैं, तब वह गुरूशक्ति का प्रतीक होती है, फिर वं. दादा जी ने सिद्ध किए हुए साधन का संस्कार करके गुरूशक्ति की धारणा उन प्रतीकों में की जाती है तब वे प्रतिमाएँ बनती है। इसके बाद जब उन प्रतिमाओं की शक्ति सिद्ध साधनों द्वारा कार्यान्वित होकर अपने परिवार के व्यक्तियों के माध्यम से व्यक्त होती है तब वह गुरूशक्ति की प्रतिभा है। इसी प्रकार आने वाला भक्त जब नियमित रूप से इस कार्य का लाभ लेने लगता है और नित्य उपासना करने लगता है तब वह भक्त श्री गुरू का प्रतीक बनता है, उसके बाद उस भक्त

ने गुरूशक्ति की धारणा करके प्रतिमा बनना है और फिर उस गुरूशक्ति को गुरू आज्ञानुसार कार्यान्वित करके उस भक्त को प्रतिभा मतलब गुरू का सेवक बनना है।

ऊपर लिखी गई इन अगली अवस्थाओं की प्राप्ति कर लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, **दैनंदिन ॐकार साधना।** वं. दादा जी ने हर एक प्रतिमा की सिद्धता करते समय **श्री सद्गुरू नामस्मरण** (ॐ श्री साईनाथाय नमः) किया और उन प्रतिमाओं की शक्ति कार्यान्वित करने के लिए महामंत्र का पुरश्चरण (जाप) किया। हमारे दैहिक माध्यम का प्रतिमा में स्थित्यंतर करने के लिए उसी नामस्मरण और महामंत्र की सिद्धता वं. दादा जी ने ॐकार साधना में की है और इन पारमार्थिक अवस्थाओं का लाभ जन्मजन्मांतर में भी अखंड रूपों में स्थापित रहे इसलिए तारक मंत्र (ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः) की सिद्धता ॐकार साधना में है।

इन अगली अवस्थाओं की प्राप्ति का माध्यम **श्री साईशक प्रतिमा** है जो 'कर्म यज्ञ' यह अवस्था कार्यान्वित करती है।

श्री साईशक प्रतिमा – कर्मयज्ञ

श्री साईशक प्रतिमा यह ज्ञान है। मनुष्य को अपने प्राप्त जन्म में कर्म तो करने ही होते है परन्तु जब ज्ञान से कर्म होगा तो कर्म यज्ञ होगा, यज्ञ तब सम्पन्न होगा जब उसमें आहुती होगी और वह आहुती है कर्म से एकरूप होकर कर्म करना।

परन्तु दुःखी मनुष्य अपने दुःखों को भूलकर कर्म से एकरूप नहीं हो सकता। दुःख का कारण है मनुष्य के पूर्वजन्मों के दुष्कर्म, जो उसे भुगतकर ही खत्म करने पड़ते है क्योंकि जिस तरह इस विश्व के चारों ओर के वलय में **अनाहत नाद** होता है, उसी तरह मनुष्य के चारों ओर के वलय में यह नाद होता है कि 'इस मनुष्य ने जो किया है वह उसे भुगतना है।' परन्तु इस संबंध में परमपूज्य बाबा ने दयावान होकर श्री परमात्मा से यह कहा कि, यदि पुराने जमाने में इस प्रकार से यानी कर्म भुगतने से कर्मविमोचन होता था तो भी मैं अपने भक्तों का इस प्रकार से कर्मविमोचन करवाने के लिए तैयार नहीं हूँ। फिर परमेश्वर की कृपा से परमपूज्य बाबा ने विश्व के चारों ओर के **अनाहत नाद** के साथ यह उच्चार किया कि मानव उसने किए सत्कर्म का उपभोग लेगा परन्तु उसे उसके दुष्कर्म नहीं भुगतने पडेंगे। इस तरह परम पूज्य बाबा व पुण्य विभूतियों ने निसर्ग नियम के विरूद्ध जाकर वंदनीय दादा जी द्वारा कर्मविमोचन विधि सिद्ध किए।

कर्मविमोचन में प्राथमिक स्वरूप में श्री गुरूभक्तों की 'कर्माधीन' अवस्था, 'कर्म–आधीन' अवस्था में बदल देते है। इसका मतलब यह है कि हम यानी आज का हमारा जीवन, हमारी दिनचर्या जो कर्म के आधीन थी, वह अवस्था बदलकर 'कर्म–आधीन' अवस्था होना मतलब अपना कर्म गुरूशक्ति के आधीन होना है क्योंकि धारण होने वाले कर्म का उपयोग हमारे जीवन उन्नति के लिए हो इसलिए कर्म आधीन अवस्था में कर्म हमारे आधीन हो जाता है और अब हम गुरूशक्ति के आधीन हुए है तो हमारा कर्म भी गुरूशक्ति के आधीन हो जाता है। यह किस प्रकार हो सकता है यह सोचकर गुरूशक्ति वह कर्म योग्य प्रकार से कार्यान्वित करती है। यह करते समय हमारे कर्म का कुछ हिस्सा बाजू (side) में रखा जाता है और हमारे माध्यम में गुरूशक्ति स्वरूप कर्म धारण होता है। जैसे जैसे हमारे तन्मात्रों का विकास होता है वैसे वैसे धारण हुआ यह गुरूशक्ति स्वरूप कर्म हमारे माध्यम से प्रवाहित होकर संसार के अन्य व्यक्तियों के कर्म की कमी पूरी कर देता है। जब उस व्यक्ति के कर्म की पूर्तता होकर मतलब वह कर्म अनुकूल हो के उसमे धारण होकर उसकी आत्मा को जो समाधान मिलता है तब वह आत्मा हमें आशीर्वाद देती है, और वह आशीर्वाद स्वरूप कर्म गुरूशक्ति का अंश लेकर अगले

जन्म के लिए हमारा संचित (पुण्याई) होता है, जो कि इहलोक और परलोक का कार्य है। यही अगले जन्मों की तरतूद (प्रबंध) इसी जन्म में हमें अति प्रयत्न से करनी है। इस प्रकार से कर्म सेवन और कर्म संचय गुरूकृपा से करते रहना मतलब श्री साईशक प्रतिमा की 'कर्म यज्ञ' यह अवस्था है। इस अवस्था में जब हम कार्यकेन्द्र पर दादा–बाबा के सामने विडा (दो पान के पत्ते, सुपारी और दक्षिणा) रखते है तो उसका मतलब है, 'हम अपना कर्म दादा–बाबा को दे रहे है।' दक्षिणा का यानी उस पैसे का स्रोत है हमारा दिनभर का कर्तव्य या कर्म। वह कर्तव्य या कर्म करके जो आमदनी (पुण्याई) मिलती है उसमें से एक छोटा हिस्सा हम दादा–बाबा के सामने रखते है इसका मतलब हमारे जीवन का कर्म हमने श्री गुरू के चरणों में रख दिया। अब उसके बदले में कोई भी इच्छा बाबा–दादा के सामने प्रकट करना इसका मतलब जो कर्म वहाँ रखा उसको वापस लेना यानी उस कर्म का फिर से वापस आवाहन करना और ऐसा करने पर श्री गुरू ने आपसे दूर किया हुआ आपका प्रतिकूल कर्म भी आवाहनित हो सकता है। इसलिए श्री गुरू के सामने दक्षिणा रखकर कोई भी इच्छा माँगना या मन में प्रकट करना यह प्रमाद है। जब गुरू को हमने अपना कर्म दे दिया तो बदले में श्री गुरू हमें गुरूकृपा प्रदान करते है, जिससे हमारा, हमारी आगे की पीढियों का और आगे के जन्मों का कल्याण होना निश्चित है, ऐसी श्रद्धा, ऐसी निष्ठा, ऐसा बर्ताव श्री गुरू के साथ होना आवश्यक है।

श्री कारण प्रतिमा – ज्ञान यज्ञ

साधक की इस अवस्था में उसका देह और जीवन गुरूशक्ति के आधीन हो जाता है। गुरूशक्ति निसर्ग के आधीन होने से जो स्पंदन निसर्ग से मतलब निराकार शक्ति से आ रहे है उसकी प्रेरणा गुरूशक्ति साधक को देती रहती है। उस प्रेरणा को तथा **स्थल–काल–समय** के गणित को समझकर अपना काया–वाचा–मन गुरूशक्ति में एक रूप करके उस प्रेरणा को कार्यान्वित करना यही साधक अवस्था में आज का कार्य है। इसके लिए अपने काया–वाचा–मन को आकार देकर (आचरण से) उसे श्री गुरू को तथा गुरूकार्य में अर्पण करना जरूरी है। जिस प्रकार कोई भी चीज किसी को देने के लिए वह अपने पास होनी चाहिए, उसी प्रकार काया–वाचा–मन श्री गुरू को देने से पहले वह खुद के अधीन कर लेना यानी इंद्रियों पर काबू करना आवश्यक है। आज हमारा अपनी काया–वाचा–मन पर कितना संयम है?इसका प्रत्येक गुरूभक्त ने विचार करना आवश्यक है।

साल में होने वाला साधना सम्मेलन भी एक ज्ञानयज्ञ है। आज वं. दादाजी ने स्थापन किए हुए इस मार्ग में हर साल पाँच से छः साधना सम्मेलन हो रहे है। सामूहिक ॐकार साधना से इस कार्य की सिद्धता परलोक में कार्यान्वित हो रही है और मुलाकात साधना में सभी सेवक इस कार्य के बारे में और वं. दादा जी की सीख के बारे में बोलते है। कोई भी खुद के बारे में या खुद के संकुचित विचार नहीं बोलते है। इसलिए तो यह मुलाकात 'साधना' है। यही प्रेरणा से कार्यान्वित हुआ "ज्ञानयज्ञ" है।

महाकारण प्रतिमा – धर्मयज्ञ

महाकारण में महान और कारण ये दो शब्द है परन्तु इन दो शब्दों में का 'महान' स्थूल रूप से महान ना होकर सूक्ष्म रूप में महान है जैसे कि वृक्ष का बीज जो छोटा होकर भी उसमें वृक्ष निर्माण करने का सामर्थ्य होता है। आज गुरूभक्त जो 'ॐ श्री साईनाथाय नमः' यह नामस्मरण करते है उस नाम स्मरण में उसका लाभ गुरूभक्तों के भावी पीढ़ियों को होगा इतना सामर्थ्य होता है। यह नामस्मरण करके परमपूज्य बाबा की कृपा से गुरूभक्तों ने अपना प्रत्येक कर्म 'धर्म' समझकर करना है, जैसे कि **प्रकृति**, अमीर–गरीब, छोटा–बड़ा, सज्जन–दुर्जन यह कुछ भी ना देखकर धर्म समझकर अपना कर्त्तव्य करती है। प्रकृति तथा उसके घटक जैसे कि मौसम, धूप, छाँव, वृक्ष, लता, पर्वत, नदियाँ, पशु, पक्षी ये सब अपना जीवन औरों के कल्याण के लिए व्यतीत करते है वैसे मनुष्य ने भी स्वार्थ भूलकर औरों के कल्याण के लिए जीवन

व्यतीत करना है। वास्तव में 'स्वार्थ' का सही मायने में अर्थ है ''स्वअर्थ'' यानी स्वयं खुद को प्राप्त हुए जीवन का निश्चित अर्थ समझकर स्वयं के 19 माध्यमों को विकसित करने के लिए प्रत्येक कार्य धर्म समझकर करना जो लययुक्त, यानी परफेक्ट हो इसलिए उसे सामर्थ्य देने के लिए महाकारण प्रतिमा यह लय शक्ति है।

श्री साईशक, श्री कारण और श्री महाकारण प्रतीमाओं के कर्म यज्ञ, धर्म यज्ञ, ज्ञान यज्ञ से गुरू भक्तों के 19 माध्यमों का विकास होकर तथा उनके अन्नमय से लेकर आनंदमय कोषों का एकरूपत्व होकर उन्हें नर से नारायण अवस्था का लाभ हो इसलिए इन तीन प्रतिमाओं में नरजन्म का ज्ञान, जीवन का जन्मकारण और जीवन की सार्थकता समाई है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय यानी सा रे ग म प, ये 5 कोष जब एक दूसरे से एकरूप होते है तब नाभी स्थान का सा ब्रह्मस्थान के प से एक रूप होकर जब सा प करके गुरूभक्तों की कुंडलिनी सिद्ध हुई तब वंदनीय दादा जी ने उसे, उसके प्रतीक सोने के शेष रूप में बाहर निकालकर रखा और परमपूज्य गोरक्षनाथ जी से यह प्रार्थना की कि, "इस जगत में ये जो मानव जीवित होकर भी मृत जैसे है उन्हें आप अपनी शरण में लीजिए और उन मानवों मे का कालसर्प निकाल दीजिए।" तब परमपूज्य गोरक्षनाथ जी ने वंदनीय दादा जी को यह अभिवचन दिया कि, तुम जिन्हें दीक्षा दोगे उनका कल्याण करूँगा और मानव का कालसर्प निकालकर उसमें जगत्कल्याण का कार्य करने का सामर्थ्य निर्माण कर दूँगा।" परमपूज्य साईबाबा ने भी आशीर्वाद देकर गुरूभक्तों को उनकी आँखे, कान और जिव्हा का गलत उपयोग ना करने का आदेश दिया है। गुरूभक्तों के अन्नमय से लेकर सारे कोष एक दूसरे से एकरूप होते होते आनंदमय कोष तक यानी ब्रह्मरंध्रतक आए तब वंदनीय दादा जी ने वे ब्रह्मांड से जोड़कर गुरू भक्तों को विश्वशक्ति धारण करने के लिए पात्र करने के बाद गुरूभक्तों का आनंदमय कोष का 'प' पृथ्वी के चारो ओर के वातावरण में के जो ध नी सा स्वर होते हैं उनमें के 'सा' से एकरूप होकर उनके ब्रह्मस्थान में 'पसा'(हाथ का तलवा) यह अवस्था निर्माण होने के बाद गुरूभक्तों को उनके चारो ओर की 8 दिशाओं में से जो 7 दिशाऐं अज्ञात थी उनका ज्ञान होने लगता है और तब गुरूभक्तों ने परमेश्वर से यह मांग करनी है कि आप मुझे विश्वकल्याण का कार्य करने के लिए 'पसा' इतना दान दीजिए, यह अवस्था मतलब परमपूज्य ज्ञानेश्वर जी ने श्री विश्वेश्वर से माँगा पसायदान है।

ऐसे समय गुरूभक्तों ने नित्य नियमितता से मार्गदर्शन के अनुसार साधना करने से उन्हें जब श्री विश्वेश्वर से विश्वशक्ति प्राप्त हुई तब वंदनीय दादा जी ने गुरूभक्तों को प्राप्त हुई विश्वशक्ति में से, गुरूभक्तों के लिए आवश्यक शक्ति गुरूभक्तों के पास रखकर बाकी की सर्व विश्वशक्ति एकत्रित करके वह एकत्रित विश्वशक्ति शक्तिपीठ में स्थापित की और गुरूभक्तों के माध्यम (डिव्हाईस करके) तैयार करके उनको विश्वशक्ति से जोड़ दिया ताकि विश्वशक्ति से गुरूभक्तों के माध्यमों द्वारा विश्वकल्याण का कार्य होता रहे।

नारायणी प्रतिमा – सेवा – मानवता यज्ञ

नर से नारायण हुए गुरूभक्तों के जीवन में, उनके नर जन्म का कर्त्तव्य जनहित के लिए यानी औरों के जीवन सुखमय करने के लिए कार्यान्वित हो इसलिए परमपूज्य बाबा की कृपा से सिद्ध हुई श्री नारायणी प्रतिमा यानी प्रतिभा का मिलाप करने की विधि सम्पन्न होकर परमपूज्य बाबा ने यह चौथी प्रतिमा श्री नारायणी यानी प्रेरणा श्री गुरूभक्तों को प्रदान की है।

इस नारायणी प्रतिमा की उत्क्रांत अवस्था में जो शक्ति प्रवाहित होगी वह शक्ति वंदनीय दादा जी ने मानवता युग प्रस्थापित करने के लिए सिद्ध की तथा उस शक्ति का कार्य जन्मजन्मांतर में सिद्ध किया और उस शक्ति को कार्यान्वित तथा साकार किया है सूफी विभूतियों के आशिर्वाद ने। साधारणतः नर से नारायण बने सर्व महात्माओं ने मुक्त अवस्था प्राप्त कर ली परन्तु सूफी विभूतियों ने परमात्मा से कहा कि हम सम्पूर्ण दुनिया को साथ लेकर ही आपके पास आएंगे। सूफी विभूतियों के बारे में परम पूज्य सलीम बाबा ने कहा है कि हम सब विभूति पारलौकिक तत्व के मतलब चराचर सृष्टि

के अंदर जिसका अस्तित्व आशिर्वाद के रूप में है उस तत्व के है। हम जो ये विभूति है उनमें है हाजी हज़रत मलंगबाबा, ख़्वाजा बंदे नवाज, महंमद जिलानी बाबा, सलीम बाबा, कुतुबुद्दीन बाबा और ख़्वाजा गरीबन नवाज जिनकी दरगाह अजमेर में है और वह दरगाह शरीफ आज दुनियाभर में मशहूर है, वे शहनशाह है, शहानवाज है। हम सबको अल्ला मालिक ने कार्य दिया है और हम सब हजरत साई मलंग बाबा की दुआ से इस जनकल्याण के महानकार्य में शरीख है। अगर आपने हमारे बारे में ज्ञान प्राप्त किया तो आपका ज्ञान और हमसे आपको प्राप्त हुआ ज्ञान इससे आपमें इस दुनिया में आपकी जो जिंदगी है वह बचाने की एक तमन्ना निर्माण हो जाएगी और इस तमन्ना से आप आपके अरमान, उम्मीदें, इल्तजा पूरी कर सकेंगे। इस महत्कार्य से दुनिया में मानवी जीवनों का दुःख दूर होकर उन्हें उनके प्राप्त जन्म का फर्ज़ समझना चाहिए और इसके बाद इस कार्य में ऐसी कुछ बाते है कि जो आपको आखिर तक इस विश्वशांति का कारण बनने के लिए ले जाए।

वंदनीय दादा जी ने इस सम्बन्ध में यह कहा है कि नारायण अवस्था का अनुभव मैं आपको आपके इसी जन्म में दूँगा और आप इस अवस्था का अनुभव लेकर अपना विकास करवाकर अपने जन्मजन्मों में इस नारायणी अवस्था से गुरू के साथ कार्य करेंगे। यही मानवता युग की तरतूद, श्री नारायणी प्रतिमा सिद्ध करके श्री गुरू ने आपको दी है और ऐसे कार्य की माँग श्री ज्ञानेश्वरजी ने इस पसायदान में की है जिसके अनेक अर्थों में से हमारे गुरूकार्य के अनुसार का अर्थ इस प्रकार है :

।। पसायदान ।।

1) आतां विश्वात्मकें देवें। येणें वाग्यज्ञें तोषावें।
तोषोनि मज द्यावें।। पसायदान हें।

श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी ने भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताई हुई भगवत्गीता का सार सामान्य आदमी तक आसानी से पहुँचे इसलिए 'ज्ञानेश्वरी' ग्रंथ लिखा और उस विश्वशक्ति को आगे का कार्य करने के लिए "पसायदान" के स्वरूप में आवाहनित किया। ''पसा'' मतलब हाथ का तलवा (palm) पसायदान मतलब, "हाथों में समाए और उन्हीं हाथों से प्रवाहित कर सके ऐसा दान" श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी ने ईश्वर से माँगा। ज्ञानेश्वरी ग्रंथ लिखने के बाद आखिर में उन्होंने "पसायदान" लिखा जिसके ऊपर लिखे इस पहली पंक्ति का अर्थ ऐसा है कि, हे विश्वरूप देवता, जो वांड्मय रूप यज्ञ मतलब 'ज्ञानेश्वरी' मेरे माध्यम से लिखा गया उससे आप संतुष्ट हो जाए और उस संतोष से मुझे यह पसायदान देने की कृपा कीजिए।

इस पयायदान का अनेक पंडित विस्तृत स्पष्टीकरण करते है। इस पर अनेक प्रवचन होते हैं। इस पसायदान के अनेक अर्थों में से हमारे गुरूकार्य के प्रति जो अर्थ है, उनका हम विचार करते हैं। जब श्री शक्तिपीठ की स्थापना वं. दादा जी ने की तब श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी ने बालेकुंद्री में दर्शन देकर वं. दादा जी को कहा कि 700 साल पहले जो पयायदान मैंने इस दुनिया के लिए माँगा था, उसे तुमने कार्यान्वित किया है।

2) जे खळांची व्यंकटी सांडो। तयां सत्कर्मीं रती वाढो।
भूतां परस्परें पडो। मैत्र जीवाचें।।

पसायदान की इस दूसरी पंक्ति का अर्थ इस प्रकार है कि, पसायदान ऐसा चाहिए, जिससे जो दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति, जो प्रतिकूल कर्म से घिरे हुए व्यक्ति है उनकी प्रतिकुलता दूर होकर उन्हें सत्कर्म की चाहत हो जाए। जिसका मतलब है, कर्म विमोचन और पसायदान से यह भी हो कि जिन व्यक्तियों के आपस में अच्छे संबंध नहीं है, वे एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन जाए। इसका मतलब जिनके एक दूसरे के ऋणानुबंध आपस में लाभदायक नहीं है, वे अनुकूल हो जाए, इसी का मतलब है 'ऋणमोचन'।

3) दुरितांचें तिमिर जावो। विश्व स्वधर्मसूर्यें पाहो।
जो जें वांछील तो तें लाहो। प्राणिजात।।

मतलब दुःखीजनों के जीवन का अंधकार चला जाए, याने तीसरा विमोचन 'वंश विमोचन' होकर सभी को विद्या, संपत्ती, संतती का यथोचित लाभ हो और फिर विश्व मानवता धर्म का सूरज देख पाए–जिसका मतलब श्री शक्तिपीठ

स्थापना। वं. दादा जी ने शक्तिपीठ स्थापना के निवेदन में ऐसा लिखा है कि, यह शक्तिपीठ किसी एक धर्म का स्थान नहीं है तो दुनिया में कोई भी धर्म हो और कोई भी जीव हो, प्राणी हो या पंछी हो, उस जीव की, जीवात्मा की या आत्मा की आगे की उन्नति के लिए जो दुआ उसे चाहिए उसका लाभ मिले, यह इस शक्तिपीठ से होगा यह ईश्वर का वचन है, मतलब 'जो जो वांछील तो तें लाहो, प्राणिजात।'

4) वर्षत सकळमंगळी। ईश्वर निष्ठांची मांदियाळी।
अनवरत भूमंडळी। भेटतु या भूतां।।

जब ऐसे कार्य का आरंभ इस दुनिया में होगा तब सभी मंगलमय शक्तियों का इस भूमि पर वर्षाव होता रहेगा और ईश्वरनिष्ठ लोगों का समूह, अपने गुरूनामस्मरण में एकरूप हुए भक्तगणों का समुदाय, इस दुनिया के व्यक्तियों को हमेशा हमेशा के लिए (दुनिया के अंत तक) मिलते रहेंगे और लोगों में श्रद्धा तथा भक्ति बढ़ती जाएगी।

इसी कार्य में आगे चलकर जो सेवक बनेंगे उनका वर्णन श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी करते है कि,

5) चलां कल्पतरूंचे आरव। चेतना चिंतामणीचें गांव।
बोलते जे अर्णव। पीयूषाचे।।

जब सेवक दुनिया में कार्य करेंगे तब श्रीगुरू उन सेवकों के माध्यम से दुनिया को जिसकी जरूरत है उस आत्मिक शक्ति का लाभ करा देंगे मतलब 'कल्पतरू'! कल्पतरू वह पेड़ है जो उसके परिसर में आने वाले व्यक्ति की इच्छा, कल्पना पूरी करता है और चिंतामणी यानी वह मणी जो सामने वाले व्यक्ति की चिंता दूर करके उसे समाधान की प्राप्ति करा देता है। श्री गुरूकृपा से ऐसे सेवक बनेंगे और इतने बनेंगे कि 'कल्पतरूचे आरव' मतलब कल्पतरू का जंगल निर्माण हो जाएगा और चैतन्यमय चिंतामणी का पूरा गांव बन जाएगा। यह दुआ सेवकों के माध्यम से प्रवाहित किस प्रकार होगी तो शब्दब्रह्म से। इसलिए ऐसे सेवक चाहिए कि जो "बोलते जे अर्णव, पीयुषाचे" मतलब जब वे बोले तो उनका वचन अमृत का सागर हो यानी, सागर जितना प्यार, मिठास और गुरूशक्ति सेवकों के हर एक शब्द से निर्माण हो, यह श्री गुरू को अपेक्षित है और तो ही हम सेवक अवस्था धारण कर सकते है।

श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी ने आगे लिखा है कि,

6) चंद्रमे जे अलांछन। मार्तंड जे तापहीन।
ते सर्वांही सदा सज्जन। सोयरे होतु।।

सेवक किस प्रकार हो, तो जो चाँद की तरह हो लेकिन उसमें कोई दाग न हो। चाँद पर भी दाग है लेकिन सेवक चाँद की शीतलता और लय तत्व से युक्त हो लेकिन उसमें कोई दाग न हो। सेवक सूरज जैसा हो लेकिन किसी को गर्मी से तकलीफ न दे। सेवक हमेशा सज्जन हो और सभी के सोयरे मतलब संबंधि यानी सबसे प्यार करने वाला हो।

7) किंबहुना सर्वसुखीं। पूर्ण होऊनि तिहीं लोकीं।
भजिजो आदिपुरूखीं। अखंडित ।।

ऐसा कार्य जब प्रस्थापित हो जाएगा तब दुनिया के सभी लोग सुखी हो जाएंगे। सिर्फ इहलोक के ही नहीं तो 'पूर्ण होऊनी तिहीं लोकीं' मतलब सिद्ध कार तीनों लोकों तक प्रवाहित होकर तीनों लोकों के जीव सुखी हो जाएंगे और इसे कार्यान्वित करने वाले सेवक अखंडित रूप से उस विश्व की मूलभूत शाक्ति का मतलब श्री गुरू ने सिद्ध किए हुए ॐकार का पूजन करते रहेंगे। मतलब नित्य ॐकार साधना करते रहेंगे जिस से ही यह कार्य कार्यान्वित होता रहेगा।

पसायदान की हर एक पंक्ति साढ़े तीन भाग की है ओर उसे कार्यान्वित करने वाला, वं. दादा जी ने सिद्ध किया हुआ ॐकार भी साढ़े तीन मात्रा का है।

9) तेथ म्हणे श्री विश्वेशरावो। हा होईल दानपसावो।
येणें वरें ज्ञानदेवो। सुखिया झाला।।

इस पंक्ति में विश्व के ईश्वर ने श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी को प्रेरणा का अभिवचन दिया कि, "यह पसायदान इस दुनिया को मिल जाएगा। यह सुन कर श्री ज्ञानदेव सुखी हो गए।"

इस पसायदान को वं. दादा जी ने कार्यान्वित किया है और दुनिया के अंत तक यह कार्य सेवकों के माध्यम से चलता रहेगा ऐसी अनेकों गुरूओं की दुआ है। ऐसे अनेक गुरू के गुरूमार्ग का प्रारंभ श्री गुरू दत्तात्रय ने किया है। श्री शंकर भगवान ने दीक्षा दिए तथा श्री दत्तगुरू ने अनुगृहीत किए नवनाथ इस गुरूमार्ग के पहले सिद्ध है जिन्होंने अपने जीवन में साध्य प्राप्त करके अनेक गुरूभक्तों को सनाथ करके गुरूपरंपरा निरंतर रखी है। परमपूज्य बाबा दसवें नाथ तथा वंदनीय दादा जी ग्यारवें नाथ है जिन्होंने हम सब गुरूभक्तों को सनाथ किया है।

'उत्सव हा दत्ताचा' इस परमपूज्य पंत महाराज जी की आरती में गुरूभक्तों का यथार्थ वर्णन है कि :

श्री दत्तगुरू का उत्सव यह सब गुरूभक्तों का सहज आनन्द है ऐसा श्री दत्तगुरू का उत्सव है।

जिनका जन्म मृत्यु का डर खत्म हुआ है और द्वैत के विचार सम्पूर्णतः नष्ट हुए है ऐसे विरक्त हुए गुरूभक्तों का यह दरबार श्री दत्तगुरू के उत्सव का आनन्द ले रहा है।

बोध द्वारा हुए ज्ञान से मुक्ति प्राप्त करके जो निजानन्द में मगन हुए है ऐसे इन गुरूभक्तों को अपने कर्तव्य का, श्री गुरूकृपा से उनके हाथों, उनके अनजाने हो रहे महान कार्य का पता भी नहीं है, वे केवल श्री दत्तगुरू का उत्सव सहजानन्द से मनाना जानते है।

श्री दत्तगुरू रूप स्वानन्द के निर्मितीस्त्रोत के भजन में सदैव मगन रहने वाले गुरूभक्त जब आनेवाले भक्तों को भी सहजता से निजानन्द की प्राप्ति कराते है तब सबके द्वारा श्री दत्तगुरू का विश्वोत्सव मनाया जाता है।

तब विश्व में आनंद ही आनंद होता है। वह दत्तगुरू का ब्रह्मानंद जब दत्त चरणों में सबकी वृत्ती धुंद (मग्न) कर देता है तब विश्व में ब्रह्माण्ड समाने का अनुभव सब को होता है जो कि वंदनीय दादा जी ने गुरूभक्तों को दी 'पसा' अवस्था है। इस अवस्था में नर से नारायण बने गुरूभक्तों को श्री विश्वेश्वर से गुरूशक्ति का पसायदान प्राप्त होकर वे नारायणी अवस्था में मानवतावाद से विश्व कल्याण कार्य में शरीक होकर कार्य करें यही गुरूचरणों में अखंड प्रार्थना है।

यह कार्य इस प्रकार जगत के अंत तक चलने वाला है। जब लय तत्व की सिद्धता वं. दादाजी ने बत्तिसशिराला में की थी तभी 'प्रेरणा' इस विषय पर वं. दादा जी ने कहा था कि यह कार्य कई हजारों साल पुराना है। श्री नवनाथों के समय से यह शुरू हुआ है। श्री गहिनीनाथ जी ने श्री निवृत्तीनाथ जी को दीक्षा दी और श्री निवृत्तीनाथ जी ने अपने छोटे भाई, श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी को यह दीक्षा प्रदान की, जिन्होंने भगवान श्री कृष्ण की लिखी हुई 'गीता' का ज्ञान सामान्य आदमी तक 'ज्ञानेश्वरी' इस ग्रंथ के रूप में पहुँचाया। उस समय ज्ञानेश्वरजी ने 'पसायदान' माँगकर जिस शक्ति का आवाहन 700 साल पहले किया था उस शक्ति की सिद्धता श्री साईनाथ महाराज जी ने दत्त–नाथ–सूफी पंथों में की और उसको कार्यान्वित किया हम सबके प्यारे वं. दादा जी ने। श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज जी ने उन्नीस साल की उमर में 'ज्ञानेश्वरी' लिखी, फिर 'गीता' का अभ्यास कब किया?मतलब श्री संत ज्ञानेश्वर जी ने 'ज्ञानेश्वरी' ईश्वरी प्रेरणा से लिखी और उसके आखिर में 'पसायदान' लिखा। यही 'पसायदान' वं. दादा जी ने कार्यान्वित किया इसलिए प्रत्येक साधना सम्मेलन में एक सेवक से वं. दादा जी यह पसायदान कहलवाते थे। यह 'पसायदान' जो ज्ञानेश्वरी के आखिर में है, वह 'आत्मनिवेदन' ग्रंथ के शुरूआत में हैं, और उसे कार्यन्वित करके वं. दादा जी ने आगे का कार्य सिद्ध किया है।

इस 'पसायदान' में मूलभूत ब्रह्माण्ड शक्ति से (आतां विश्वात्मकें देवें) दान माँगा है। इस पसायदान की पंक्तियों में निराकरण पद्धति, शक्तिपीठ स्थापना, कार्य का विस्तार और सेवक अवस्था का वर्णन किया है उसके आगे साधक अवस्था का कार्य और आखिर में उसका महत्व बताया है कि:

8) आणि ग्रंथोपजीविये। विशेषीं लोकीं इयें।
दृष्टादृष्ट विजयें। होआवें जी।।

मतलब इस प्रकार के समिती के कार्य में जब साधक अपना पूरा जीवन, तन–मन–धन से बिताएगा तब दृष्ट और

अदृष्ट इनका विजय होगा मतलब तब इस विश्व को, इस सृष्टि को संभालने वाली साकार और निराकार शक्ति का विजय होगा, अर्थात इस कार्य में साधक जब सिद्ध होकर कार्य करेगा तब ब्रह्माण्ड शक्ति, देवदेवता और अन्य दिव्य, पूज्य विभूतियों का विजय होगा।

ऐसी विजय गुरूकृपा से दश दिशाओं में हो, इसलिए विजया दशमी मनाई जाती है। इस विजया दशमी के शुभ अवसर पर श्री साईशके 31 का आरंभ हुआ है। वं. दादा जी ने स्थापन किया हुआ यह कार्य विश्व की दश–दिशाओं में विजयी हो, यशस्वी हो और यह साध्य होने के लिए हम सभी गुरूबंधू–भगिनीयों के माध्यम का उपयोग वं. दादा जी और प.पू. बाबा कर ले, यही उनके चरणों में प्रार्थना है।

परन्तु यह महानकार्य हम गुरूभक्तों द्वारा जगत् के कल्याण के लिए निरंतर कार्यान्वित रहे इसलिए यह आवश्यक है कि मानवों ने नर से नारायण होना तथा उन्हें नारायणी अवस्था का लाभ प्राप्त होना। यह प्रक्रिया इस जगत में की इस पीढ़ी से लेकर आने वाली अनेक पीढियों तक सदैव कार्यान्वित रहे, इसलिए विभूतियों के मार्गदर्शन द्वारा अपना जीवन किस आचरण से गुजारकर आने वाली पीढियों को हम क्या संदेश दे सकते है इसके बारे में परमपूज्य बाबा तथा पुण्य विभूतियों के मुलाकात द्वारा, वंदनीय दादा जी के निवेदनों द्वारा, परमपूज्य पंत महाराज जी की आरती द्वारा किया मार्गदर्शन आज भी गुरूभक्तों के लिए उपलब्ध है। इस संबंध में परमपूज्य अजमेर शरीफ बाबा का मार्गदर्शन यह है कि अरे मानव, तू किस्मत का खाता है और खाएगा भी। परन्तु तू मेरी दुआ से कुछ खाने की ताकत पैदा कर और मेरे पास आया कर और जो कुछ मुझसे लेना है वह तू लेता जा लेकिन तू जिंदगी में कभी रोने के कोशिश ना कर। अपनी तबीयत हर वक्त ऐसी रख कि तेरे काम के लिए मुझे ही आना पड़े। ऐसी इल्तज़ा और ऐसी उम्मीद रख और मेरे लिए तू बारबार मुझे याद करता जा और मैं तेरा जीवन आबाद करने के लिए बारबार आता रहूँ। अब तू अफसोस की सोच में ना बैठ।

इसी तरह परमपूज्य जिलानी बाबा का मार्गदर्शन यह है कि अपना प्रपंच (घर गृहस्थी) यथायोग्य करने की जिम्मेदारी आप पर होती है और वह जिम्मेदारी निभाते समय जब आपको समस्याएँ तथा परेशानीयों का अनुभव होता है तब आप उसके लिए सहायता प्राप्त करने के विचार से ईश्वर को ढूंढने निकल पड़ते हो।

वास्तव में मनुष्य को जन्म प्राप्त होने के पहले ही उसका जीवन ईश्वरमय हो यह संकेत होते हुए भी मनुष्य को संसार के, प्रपंच के और ऐहिक के प्रति आसक्ति और परमेश्वर के प्रति निरासक्ति क्यों होती है? मनुष्य के जीवन में प्रपंच और परमार्थ इन दोनों का बीज एक साथ ही बोया हुआ है, दोनों एक साथ ही निर्माण हुए हैं इसकी प्रचिति ईश्वर ने मनुष्य को दो हाथ दिए है, इससे होती है। जैसे आपको एक हाथ बाँध कर एक ही हाथ से काम करने के लिए कहा तो वह आपके लिए मुश्किल होगा या आप एक ही बाजू में आस्तीन व दूसरी बाजू बिना आस्तीन की ऐसा शर्ट पहनोंगे तो लोग आपका मजाक उडाएंगे ऐसा ही प्रपंच या परमार्थ इनमें से केवल एक ही करने के बारे में है।

आपको लगता है कि आपको यहाँ गुरूमार्ग में आपका दुःख ले आया है, परन्तु यह सच नहीं है। आप ईश्वर को, परमार्थ को भूल गए थे, यह आपको याद दिलाने के लिए आपका कर्म आप के जीवन में दुःख का कारण निर्माण करके, आपको यहाँ गुरूमार्ग में ले आया है। कर्म परंपरा बड़ी गहन है, कर्म परंपरा ने देवादिकों तक को भी नहीं छोड़ा फिर आप मानव उससे कैसे छुटकारा पाओगे?मनुष्य के पूर्व जन्मों के अनुकूल कर्म उसे सुख का अनुभव देते है और प्रतिकूल कर्म दुःख का। प्रत्येक मनुष्य के चारों ओर जो वलय होता है उसमें यह निरंतर नाद होता है, कि इसने किया है इसे भुगतने दो और इस तरह पूर्व काल में कर्मों का परिणाम भुगतने से कुछ मात्रा में कर्मविमोचन होता था। परन्तु दयासागर सद्गुरू साई बाबा ने परमेश्वर से प्रार्थना करके उन्हें कहा कि 'जैसी करनी वैसी भरनी' इस प्रकार जो कर्मविमोचन पूर्वकाल में होता था वैसा अपने भक्तों का कर्म विमोचन करने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ। इसलिए परमपूज्य बाबा ने संपूर्ण चराचर के चारों ओर के वलय में जो निरंतर नाद है उसके साथ यह उच्चार किया कि ''जिसने जो किया है वही वह भोगेगा परन्तु

वह भोगते समय केवल अपने सत्कर्म भोगेगा, परन्तु अपने दुष्कर्म नहीं भुगतेगा।'' इससे आप कल्पना कर सकोगे कि हम विभूति निसर्ग नियम के विरूद्ध जाकर आपके लिए कार्य कर रहे है।

इस गुरूमार्ग के गुरूकार्य में वंश विमोचन, कर्मविमोचन और ऋणविमोचन ये तीन महत्वपूर्ण साधन है। विमोचन मतलब जन्मजन्मों के पातक, प्रमाद, सत्कर्म ये जो प्राप्त जन्म में बिखरे हुए होते है वे क्रमशः यथायोग्य लगाना, जो होने से आज मनुष्य से जो अगतिक (विवश होकर) कार्य हो जाते है वे नहीं होते है परन्तु कर्मविमोचन तब होता है जब उससे पुनश्च वैसे दुष्कर्म नहीं होंगे तो, जिसके लिए मनुष्य ने मनोनिग्रह करके खुद को गलत आचरण करने से रोकना आवश्यक होता है। मनुष्य को खुद से हो रही गलतीयों का अहसास नहीं होता तथा अगर किसी ने उसे उसकी गलतीयों के बारे में बताया तो भी वह अपनी गलती मानने के लिए तैयार नहीं होता। इसलिए वंदनीय दादा जी ने गुरूभक्तों को, 'परमार्थ प्रश्नावली' देकर बताया है कि इसमें बताई प्रत्येक गलती मनुष्य से होती है या हो सकती है, परंतु ऐसी गलती ना हो इसलिए प्रत्येक गुरूभक्त ने परमार्थ प्रश्नावली पढ़ने की आदत खुद को लगाकर अपने परिवारवालों को लगाई तो इस आदत से परिवार में स्नेहभाव निर्माण होगा तथा समाज में भी एक दूसरे के प्रति स्नेह व प्रेम निर्माण होकर परस्पर सहकार्य से अनेक समस्याएँ सुलझ जाएगी।

सद्गुरू कृपा से कर्मविमोचन हो, इसलिए प्रत्येक गुरूभक्त ने मनोनिग्रह करके अवधानपूर्वक योग्य आचरण करके बाबा से कर्मविमोचन के लिए आशीर्वाद माँगना है। आजतक आपने कई बार अपना काम हो इसलिए बाबा से आशीर्वाद की माँग की है। अब आपने उचित कर्तव्य के, सत्कर्म के आड़े आने वाले वज्र जैसे कठिन कर्म का विमोचन हो इसलिए बाबा से आशीर्वाद माँगना है। इस दृष्टिकोण से आजतक आपने अपना खुद का या बीबी, बच्चों का विचार नहीं किया है। आपकी यह धारणा है कि बच्चों को बचपन से ही देवधर्म क्यों करना है? परन्तु अगर किसी परिवार का उद्धार होने के लिए एक व्यक्ति को 5 साल सेवा करना आवश्यक होगा तो संपूर्ण परिवार ने सेवा, उपासना करने से उस परिवार का उद्धार 2 साल में हो जाता है और प्रत्यक्ष सद्गुरू ने विमोचन करने से उस परिवार का उद्धार 6 महिनों में ही हो जाता है। लेकिन यह तब होगा जब परिवार का प्रत्येक सदस्य घर में बनी चाय का या डिब्बे में रखी मिठाई का अधिकारी होता है और वह उसे मिले इसका ख्याल जैसे माता–पिता, घर के बुजुर्ग रखते है वैसे ही उन्होंने, घर का प्रत्येक सदस्य बाबा के आशीर्वाद का अधिकारी होने के लिए सेवा उपासना कर रहा है, यह भी देखना है। अगर दुःख संपूर्ण परिवार का है तो परिवार के सबको सेवा करनी चाहिए और माता–पिता और घर के बड़े बुजुर्गों ने उन्हें प्यार देकर उनसे करवानी ही चाहिए। घर के बच्चों को बहुत समय के लिए सेवा उपासना करने की आवश्यकता नहीं होती है। बच्चों ने कोई एक स्तोत्र पठन या थोड़ा समय नामस्मरण करने से भी परिवार के उद्धार के कार्य में बच्चों की सहायता होकर परिवार को विधाता की कृपा प्राप्त होती है।

इस वातावरण से विधाता की कृपा का वर्षाव जगत के हर एक पर होता रहता है। फिर चाहे कोई ईश्वर भक्त हो या ना हो उस पर विधाता की कृपादृष्टि का वर्षाव होगा ही। परन्तु इस वर्षा के पानी का अपने जीवनरूपी खेत के लिए उपयोग हो इसलिए ध्यान, पूजन, निश्चित आचार–विचार आहार इनका बाँध अपने जीवन के खेत में बनाना आवश्यक है वरना वह पानी बह जाने के कारण उसका लाभ जीवन को नहीं हो पाएगा। नित्यनियमितता से प्रत्येक दिन किए उपासना से दिनभर खर्च की गई जीवनशक्ति फिर से प्राप्त होती है। इसलिए कभी भी नित्य उपासना में खंड नहीं होना चाहिए।

अब बाबा और आपमें दूसरा कोई नहीं आना चाहिए। बाबा के मार्गदर्शन के अनुसार ही सेवा, उपासना, आचरण होना चाहिए तभी आपको वंश, कर्म, ऋण विमोचन का लाभ प्राप्त होगा।

आपको जैसे जैसे विमोचन का लाभ होने लगता है वैसे वैसे आपके ऐहीक काम भी उनकी प्रतिकुलता निवारण होने के कारण आसानी से होने लगते है जिसे आप बाबा की कृपा मानते हो। इस संबंध में गुरूमार्ग में रहकर भी आपका यह विचार होता है कि सुबह दुधवाला वक्त पर आया, जूते दो रूपये सस्ते मिले, कोई काम हुआ इत्यादि सब हुआ तब, मतलब बार–बार आप यह कहते हो कि परमपूज्य बाबा की दुआ है। परन्तु आपका यह कहना सही नहीं है। आपको पैसा देना, पोता–पोती देना, आपका काम करना, क्या इसके लिए बाबा है? इस बारे में आप कितने अज्ञानी हो इसका विचार आपने कभी किया है क्या?आपके इस अज्ञान के कारण आप व दूसरे भी ना फंसे इसलिए तथा इस मार्ग का जीवन के बारे में जो अत्यंत शुद्ध और सत्य, तात्विक भाव है वह आपको सिखाने के लिए मैं यहाँ आता हूँ। यह सीख आपको देते समय अगर मैंने आपको कुछ कहा तो आपको तुरन्त गुस्सा आता है। आपके इस देह ने अब तक क्या करना बाकी रखा है? शराब, मांसभक्षण, चिकन तथा अन्य अनेक वाम मार्ग का अवलंब आपने अब तक किया है। आजतक के आपके वे सारे कर्म मैंने अपनी झोली में लिए है। आजतक आपसे कुछ गलत हुआ होगा तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन कम से कम इसके आगे आपके देह को योग्य आचरण की आदत लगकर, आपके इस देह माध्यम द्वारा औरों को सुख, समाधान प्राप्त होकर, आपके प्राप्त जन्म का सार्थक हो इस आंतरिक भावना से (उत्कट उद्देश्य से, तड़प से) मैं आपसे मिलता हूँ। यह कितनी बड़ी जिम्मेदारी बाबा ने मुझ पर सौपी है और वह जिम्मेदारी निभाते समय, आपको ज्ञानी करने के लिए, अगर मुझे आपको कभी चार शब्द डाँटकर बोलने पड़े तो आपको क्यों गुस्सा आता है?इसकी अपेक्षा, बाबा आप इतना बताते हो, फिर भी मैं अबतक मार्ग में क्यों नहीं हूँ यह कह कर आप खुद को ही थप्पड़ क्यों नहीं मारते हो?नवीन वर्ष चार दिन के बाद आरंभ होगा और अगर आप इसी अज्ञान में रहे तो 1962 साल में भी आपसे कुछ सेवा नहीं होगी। इसलिए मैं आज आपसे मिल रहा हूँ। अगले साल आपका यह ढीलापन नहीं चलेगा। अगर आपसे यह नहीं हो पाएगा तो आज ही बताइए, मैं नए सेवकों से काम करवा लूंगा।

आज की आपकी दिनचर्या मतलब सुबह जल्दी उठना, पूजा पाठ, उदी इत्यादि सब देखकर यहाँ आने वाले नए भक्त कहेंगे कि, ये देवतातुल्य लोग है। आप स्वयं भी इस भावभावना में है कि हमारा आचार–विचार व आहार इन पर काफी संयम है और हमारी साधना भी ठीक चल रही है। परन्तु यह मानकर आप खुद को ही फंसा रहे हो (बेवकूफ बना रहे हो)। इस गुरूमार्ग के बाहर की दुनिया के महाराज आपकी यह सेवा देखकर प्रसन्न होंगे, परन्तु हम नहीं। हमारे इस आसन के नीचे ज्वालामुखी है। आपके 'बाबा, बाबा' करके नमस्कार करने से बाहर का जगत फंसेगा क्योंकि उन्हें केवल आपका नमस्कार दिखाई देता है परन्तु नमस्कार करने वाले के अंतरंग का शोध लेकर वह कौन–सी भावना से नमस्कार कर रहा है, यह हमें स्पष्ट रूप में दिखाई देता है तो फिर हम उस नमस्कार से कैसे फंसेगे।

आपको अहवाल (रिपोर्ट) देने के लिए कहकर छः महीने हो गए फिर भी अभी तक आपने रिपोर्ट नहीं दिए है और हमारे पूछने पर गरदन हिलाकर बेझिझक 'नहीं लिखे' ऐसा कहते हो इसका अर्थ क्या है?आजतक इस गुरूमार्ग के बाहर आपने यही किया है। परन्तु तब आपको कठोरता से पूछने वाला कोई मिला नहीं। तुम ऐसे क्यों बैठे हो, ऐसा बर्ताव क्यों किया? पुरानी रेशम की धोती पहनकर ये क्या कर रहे हो?ऐसा हमेशा आपको पूछकर आपको अनुशासन में बिठाने वाला कोई आजतक आपको मिला नहीं है। आपको लगता है कि, अब हमारे आचार–विचार, आहार पर संयम (नियंत्रण) है, हमारी साधना में प्रगति है परन्तु अब तक आपने साधना की ही नहीं है। आजतक आपने इस गुरूमार्ग के यम–नियम सीखे मतलब, आपने 'साधन' सीखा है, 'साधना' नहीं। हर जगह बाबा की कृपा, बाबा की कृपा कहकर नाचना बंद करो। साधन–साधना व सिद्धता यह क्रम, मतलब अभी प्रत्यक्ष बाबा आपसे बहुत दूर है। जैसे मान लिजिए कि आप बालबच्चों को लेकर दिल्ली जाने के लिए निकले हो, दिल्ली के टिकट का मूल्य देकर आपने दिल्ली का टिकट ले लिया। परन्तु वह टिकट यानी दिल्ली नहीं है। गाड़ी चलने के बाद आने वाले प्रत्येक स्टेशन पर बच्चा आपको पूछता रहता है कि क्या यही दिल्ली है?तब आप क्या उसे बताकर समझाते हो कि बेटा, यह दिल्ली नहीं है अभी दिल्ली बहुत दूर है। आज आप

भी वही कर रहे हो। यम–नियम यानी 'साधन' है 'साधना' नहीं। आपको टिकट देकर बताया कि दिल्ली जाओ मतलब बाबा के पास जाओ तो आप उस टिकट को यानी साधन को ही दिल्ली मतलब बाबा समझ रहे हो, परन्तु यह आपका भ्रम है। काया, वाचा मन से हो रहा कोई भी कार्य साधना है। आज साधना करते समय क्या आपका काया, वाचा, मन एक रूप हो रहा है? आपका भाव और भावना कहाँ है? "हे भगवान, आप कहाँ हो" केवल यह कहते ही आँखों से टपटप आँसु बहने चाहिए। क्या ऐसा अनुभव आपने किसी दिन किया है? आज अज्ञान से आप इतने ढीट (पक्के) हुए हो कि लाठी की मार खाकर भी आपकी आँखों में आँसु नहीं आते हैं। यह इस क्षण की आपकी अवस्था है और आपको लगता है कि अपनी साधना एकदम योग्य पद्धति से हो रही है। कितना बड़ा अज्ञान है यह!

पिछले 4–5 सालों से आप भक्तभाविकों को तीर्थ और अभिमंत्रित गोलियाँ दे रहे हो। परन्तु तीर्थ यानी क्या, स्पर्श संवदना, ज्ञान संवेदना मतलब क्या है यह आप समझ गये हो क्या? इनका मैंने ही बताया हुआ अर्थ मुझे मत सुनाइये। आपको उनका अर्थ क्या समझ में आया तथा आपके जीवन में उनका क्या अर्थ है यह बताइए। विचार संवेदना द्वारा बुरे विचार, संवेदना के रूप में त्याग करना है, यह आप समझ गए परन्तु मूलतः आप बुरे हो, आपके मन में बुरे विचार है यह आपको मान्य (कबूल) है क्या? आपके बुरे विचारों के कारण आपसे बुरा कर्म होकर उससे औरों को दुःख होता है इसका विचार आप करते हो क्या? जून1961 में जब साधना शुरू की उस समय मेरे मन में कौन से बुरे विचार थे और आज कौन से हैं, इस सवाल का तथा इतने साल बनाई अभिमंत्रित गोलियों से भक्तीभाविकों को जो लाभ हुआ है वह आपके कारण या बाबा के कारण? इन सवालों के जवाब क्या आपके पास है?आपके पास उत्कट भावना (तड़प) ही नहीं है। वरना आप मुझे यह पूछते कि आपने मुझे नियुक्त किया है तो स्पर्श संवेदना का अर्थ आप मुझे बताइए।

जिस साधना से आपका चैतन्य या मन जागृत हुआ है उस साधना की ओर दुर्लक्ष मत कीजिए। आज साधना की बाल्यावस्था है। आपने बहुत धन कमाया फिर भी उस धन के लालच में आप नहीं आए, यह बाबा की कृपा है। पैसा मिल गया और मोटर घर में आई तो यह भावना चाहिए कि, बच्चों तुम मोटर में घुमकर आओ, मौज करो लेकिन मैं आरती के लिए कार्यकेन्द्र पर जाकर आता हूँ। इस गुरूमार्ग के बाहर के जगत में 'एलम्' करते है। मतलब चैतन्य जागृत किए बिना तथा ऋणानुबंध विमोचित किए बिना वहाँ 'एलम्' करते हैं जिससे पैसा तो मिलता है, परन्तु सब कुछ होने के बाद हाथों में केवल लाल पैसा ही रहता है। इस गुरूमार्ग में मिलने वाले पैसे जागृत अवस्था के हैं, उन पैसों से आपके बच्चों का चैतन्य जागृत करो।

आपके दरवाजे पर जो कुत्ता होता है उसे आपने रोटी के दो टुकड़े देने से वह आपकी सेवा के लिए हाज़िर होता है। आपके घर में कोई पराया आदमी प्रवेश कर रहा होगा तो वह उस पर भौंकता है। जैसे पराया आदमी घर में प्रवेश करता है, वैसे आपके इस देह में किस–किस का प्रवेश हुआ है इसका विचार आपने किया है क्या?उसके लिए क्या कभी आप खुद पर भौंकते हो क्या?आप तो एक दूसरे पर भौंकते हो।

आज कोई भी चिंता नहीं, इसलिए ईश्वर की क्या जरूरत है ऐसा प्रश्न आपकी बुद्धि में आ सकता है लेकिन मैं कहता हूँ कि तकलीफ निवारण करने के लिए नहीं, लेकिन आजतक आपने जो कुछ भी कमाया है उसका उपभोग लेने के लिए भी कृपा की आवश्यकता होती है।

इस कार्य में चमत्कार–सिद्धि इनका कोई स्थान नहीं है। मच्छिंद्रनाथ जी ने किसी स्त्री की प्रार्थना पर उस स्त्री को संजीवनी दी व कहा कि बेटा होगा। वह संजीवनी मतलब साध्य था। हम आशीर्वाद के रूप में हमारे पास का 'साध्य' दे सकते है। परन्तु उसका फल प्राप्त करने के लिए किसी के पास प्रथम कामना (इच्छा) होनी चाहिए। जिन के हाथ में साक्षात संजीवनी थी वे प्रत्यक्ष गोरक्षनाथ बना नहीं सकते थे क्या?परन्तु अगर वे वैसा करते तो वह सिद्धी होती और हम सिद्धी का उपयोग नहीं करते। इसलिए उस स्त्री के मन में कामना उदित की, फिर आशीर्वाद के रूप में उसे 'साध्य'

दिया। इसके पश्चात जो आशीर्वाद लेता है उस व्यक्ति पर उस आशीर्वाद का फल निर्भर होता है। याने अगर उस स्त्री के मन में बेटा होगा या बेटी इस तरह का विचार आता तो बेटी ही होती। उस समय जो मच्छिंद्रनाथ जी ने कहा वही बाबा ने कहा, "जया मनी जैसा भाव या तैसा अनुभव" (जिसके मन में जैसा भाव उसे वैसा अनुभव) जिसकी अपेक्षा करोगे वह सिद्ध होगा।

साध्य मतलब देवऋणानुबंध जोड़कर तुम अभी सिद्ध ही माँग रहे हो। परन्तु क्या तुम सिद्ध हो? श्रेष्ट (उत्तम) तत्वाचरण जिंदगी में सुख देता हैं। यही जीवन का साध्य है। आरती के लिए कितने दिन आप उपस्थित रहते हो व कितने दिन अनुपस्थित रहते हो, इससे आपकी प्रगति का पता लगेगा। ग्रहों के अंश आप नापते हो, परन्तु आपका जीवन कितने अंश का है? आपका जीवन 10 अंश का माना तो, उसमे के 5 अंश प्रपंच, इतरेजनों के लिए 3 अंश, बेढंगे बर्ताव के लिए डेढ़ अंश और आज तक जो साधना की उसके लिए 1/2 अंश, मतलब 1/2 अंश जीवन ही सही साधना के लिए रहता है।

जिस इन्सान को भैंस क्यों पालते है यह समझ में आयेगा उसे ही, उपासना क्यों करते है यह समझ में आएगा। आज आरती करने से लेकर आए हुए भक्तों के जूते ठीक ढ़ंग से लगाकर रखने की मन की तैयारी हो गई, वह सहिष्णुता आई, इसका अर्थ आप सिद्ध हो गए। तुम कार्यालय में 30 दिन काम करते हो, यह आपका बॉस देखता है, परन्तु रेव्हेन्यू स्टैम्प पर पेन से (कलम) हस्ताक्षर किए बिना वेतन नहीं मिलता। पेन सिद्ध हुए बिना तनख्वा साध्य नहीं। बैंक में रखे हुए आपके पैसे अगर आपको चाहिए तो पेन से हस्ताक्षर करने ही पड़ते हैं। परन्तु उस पेन के प्रति आपने कभी कृतार्थभाव प्रकट किया है क्या? तुम पेन के साथ बात नहीं कर सकते तो, बाबा के साथ क्या बोलोगे? घर में कार होती है, परन्तु क्या उस पर हाथ फेर कर कभी प्रार्थना की है क्या कि, 'हे माता तुमने सबको मुंबई की सैर करा कर सुरक्षित वापस घर लाया, तुम्हारे बिना जीवन व्यर्थ है, ऐसी जन्मजन्म में उतराई हो।' इस तरह से प्रार्थना तो करते ही नहीं हो परन्तु अहंभाव की मस्ती में "मैंने अपने पैसों से कार खरीदी" ऐसे कहते हो। परिणामतः कार घर से जाती है। आपका हास कैसे होता है इसका ध्यान देकर (बारीकी से) अभ्यास करें। तुम्हारे घर में टेलीफोन है। दिल्ली जाने के लिए 200 रूपये खर्च होते है परन्तु 2–4 पैसे से टेलीफोन से बात करने से तुम लाखों रूपयों का व्यापार करते हो। तुम बोलते हो मतलब शब्द तन्मात्र हैं। वह शक्ति उद्धारार्थ है। उस शक्ति से कितने काम करते हो? परन्तु उस टेलीफोन को कभी नमस्कार किया है क्या?आँखों के ऊपर का चश्मा उतारो तो सब व्यवहार रूक जाते है। एक सूज्ञ इन्सान की बुद्धि ने उस चश्में में चैतन्य निर्माण किया, जिसके कारण आपके आँखों की कमजोरी समाप्त हुई। चश्में के बिना जीवन नहीं, फिर सद्गुरू के बिना जीवन कैसे जिओगे? पेन आपकी जेब में हमेशा बैठा रहता है। पर उसके बारे में इतनी अनास्था (दुर्लक्ष)! उसकी कभी पूजा नहीं होती फिर हम कैसे विश्वास करें कि आप बाबा की पूजा करोगे?

जीवन में हर कदम पर सहायता करने वाली इन चीजों का आशीर्वाद जो समझ नहीं पाया, उसे बाबा का आशीर्वाद पूरी उमर में समझ नहीं आएगा। चश्में से लेकर ईश्वर तक हम जी नहीं सकते यह भावना याने सिद्ध होना।

अब साध्य साधना है। दूध की मलाई दूध में ही होती है, परन्तु मलाई मिलने के लिए दूध को उबालना पड़ता है। जैसे–जैसे सिद्धता पूर्णत्व को जाएगी, वैसे–वैसे साध्यता साध्य होगी।

अब आपको चाय पीनी है; प्याली की नहीं–स्मृति की। प्रपंच में सिद्धता है और परमार्थ में साध्यता है। आप बिस्तर पर आठ दिन सोते रहे मतलब पैरों का इस्तेमाल नहीं किया तो जिस दिन चलने लगोगे तब पैर कांपने लगेंगे। पैर आपके ही है, परन्तु अपना धर्म अगर वे छोड़े देंगे तो चलेगा नहीं। वैसे आप भी आपका धर्म छोड़ोगे तो चलेगा नहीं। बड़ा पतीला एक हाथ से उठाया नहीं जा सकता परन्तु दो हाथों से आसानी से उठा सकते हैं। उसी तरह प्रपंच (गृहस्थी) व परमार्थ साथ–साथ करना है। प्रपंच में सिद्धता है, तो परमार्थ में साध्यता है।

कुछ सालों तक इस कार्य का लाभ लेने के बाद यहाँ मुलाकात सुनने के बाद आप लोग अन्य आध्यात्मिक किताबें पढ़ते हो और वहाँ लिखे कुछ अनुभव और यहाँ मिलने वाला ज्ञानरूपी अमृत इनकी तुलना करने का प्रयास करते हो। परन्तु यहाँ आपको जो मार्गदर्शन होता है वह परलोक से आने वाली विभूतीयाँ करती है। किसी भी मानव की बुद्धि की परीसीमा जहाँ समाप्त होती है वहाँ से विभूतीयों का कार्य–मुलाकात, आरंभ होता है। इसलिए मुलाकात सुनते समय आप तन्मय होते हो, तो भी बाद में आपको थोड़ा ही विषय याद रहता है।

साईबाबा का फोटो लगाकर भक्तों को मार्गदर्शन कई जगह किया जाता होगा, परन्तु यह गुरूपीठ कुछ अलग ही है। इस जगह यानी कार्यकेंद्र पर जो जाज्वल्यता (प्रखरता))है वह दूसरी जगह होगी ही, यह कह नहीं सकते। आज यहाँ आपसे साधना करवाई जाती है। अन्य किसी जगह गए तो नाक में दो उगलियाँ डालो व अन्य अभ्यास और साधना घर में करो ऐसे बताएंगे, वहाँ विद्या देने की बात दूर ही है। परन्तु यहाँ कार्यकेंद्र पर तो "हम देने के लिए बैठे है आप लेने की तैयारी रखिए।" आप नवनाथ की पोथी में पढ़ते हो कि शिष्य को तपस्या करने के लिए बिठाकर गुरू 12 साल तीर्थयात्रा करने जाते थे। परन्तु गुरू सब विद्याएँ जहाँ शिष्य बैठता था वहाँ रखते थे, इसलिए यदि गुरू तीर्थयात्रा पर यानी शिष्य से दूर होते थे तो भी उतने समय में शिष्य समस्त विद्याओं में प्रवीण हो जाते थे। जालंदरनाथ लकड़ियों की गठरी अपने सिर से थोड़ा ऊपर हवा में लटकती रखकर चलते थे। वह लकडियों की गठरी मतलब विद्याएँ थी। इसके बारे में यह सवाल उठता है कि वे विद्या सिर से थोड़ा दूर हवा में लटकते क्यों रखते थे? तो उसका कारण यह है कि जब जरूरत है तब वह विद्या लेकर काम करना व काम समाप्त होने पर वह विद्या खुद से दूर रखना क्योंकि अपने हाथ से कब दुष्कर्म होंगे इसका पता नही होता है। इसलिए इस तरह से विद्या भ्रष्ट ना हो इसकी सावधानी (दक्षता) प्रत्यक्ष नवनाथ लेते थे। फिर आपने भी कितनी सावधानी बरतनी चाहिए यह सोचिए। ऊपर अंतराल मे सैंकडों वर्ष सैकडों विद्यायें है, जो आप भी प्राप्त कर सकते हो। परन्तु उन्हें प्राप्त करने के लिए आवश्यक शुचिर्भूतता (पवित्रता) व सामर्थ्य आपने संजोगना आवश्यक होता है। यहाँ का कार्य देखकर व भावनावश होकर हम भी दादा के जैसे अपना पूरा सर्वस्व इस कार्य को प्रदान करें यह विचार आप कभी भी मन मे मत लाना। हमारे पीछे पड़ना आसान बात नहीं है।

श्री दतात्रय महाराज का प्रसाद मिलना बहुत कठिन है। उन में ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीन तत्व है। साधक ने अगर गाणगापूर अथवा नरसोबा वाडी इन तीर्थस्थानों में उनके आशिर्वाद के लिए साधना शुरू की और सही तरीके से साधना चलती रही तो पहले ब्रह्मदेव अपनी माया थोड़े अंश में साधक को देते हैं। इससे साधक को दिव्यदृष्टि प्राप्त होती है और साधक आपके जीवन की कई घटनाऐं एकदम सही बता सकता हैं। इससे साधक के पास भीड़ इकट्ठा होकर लोग साधक को 'महाराज' सम्बोधित करके उसका जयजयकार करते है। परन्तु अधिकतर लोग यहाँ अपना संतुलन खो देते हैं। इस अवस्था में जिसने संतुलन बना के रखा उसे विष्णु की माया प्राप्त होती है और बहुत धनप्राप्ति होती है। इस तरह की परिस्थिति कई वर्ष चलने पर अंत में शिवजी साधक के पास आते हैं और जो बचा है वह सब ले जाते हैं और साधक के पास केवल लंगोटी रखते है। इसके बाद भी अगर विचलित ना होकर साधक ने साधना जारी रखी तो ही शंकर महाराज आँख खोलकर साधक को देखते है और साधक को उनकी कृपा का लाभ होता है, इतनी यह कठिन साधना हैं। हमारा जन्म अलग, आपका अलग। यह सब आपकी काबिलियत के परे है। 800 सालों से वे सत्पुरूष पहाड़ पर बैठे है, परन्तु उन्हें आज तक एक ही भक्त मिला और वह है आपके गुरू 'दादा'। आप हमारे पीछे पड़ने पर हम आपसे अपना ऋण किस हद तक लेते है, इसका अंदाजा क्या आपको है?एक बार हमने दादा जी को आज्ञा की कि, शिरड़ी चलो। दादाजी ने कहा कि पैसे नहीं है, हमने कहा कि पत्नी के गले में जो मंगलसूत्र हैं उसे बेचकर पैसे लाओ और उसके अनुसार करके दादा शिरड़ी आए। क्या इतना आप कर सकते हो?आपके दादा ने 3–4 साल जिस परिस्थिति में गुजारे, उस परिस्थिति में आप चार मिनट भी नहीं टिक सकते।

कुछ लोग बाबा से यह प्रार्थना करते है कि बाबा दृष्टांत दीजिए, साक्षात्कार दीजिए। परन्तु रात को जब आप सोते हो तो नींद में ईश्वर के दर्शन की इच्छा क्यों करते हो? जिस गद्दी पर ईश्वर आपको दृष्टांत (साक्षात्कार) देंगे उस पर अनेक कर्म होने के कारण वह शुद्ध नहीं होती है। इसके बजाय सुबह उठिए, स्नान कीजिए और फिर परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि, "मैं आपके सामने बैठा हूँ ,मुझे दर्शन दीजिए।" और मानो सचमुच बाबा आए और बोले कि चलो सब वैकुंठ को, तो आप में से कितने उनके साथ जाएंगे यह एक सवाल ही है। कोई कहेगा मेरी पत्नी बीमार है, कोई कहेगा बेटी का विवाह बाकी है। एक ना अनेक ऐसे बहाने आप बताओगे यह मुझे पता है। कोर्ट में 10–15 वकील होने के बावजूद एकाद फरियादी आपके ही पास आता हैं यह क्या साक्षात्कार नहीं है?आप प्रापंचिक लोग सुख से (चैन से) गृहस्थी करो व बाबा को प्रार्थना करो कि, "बाबा, आप जहाँ है वहीं रहिए और वहीं से हमें आशिर्वाद दीजिए।" आप जीवन की राह चलते समय हम सदैव आपके साथ है। हमारी रोशनी में आपको अगला रास्ता साफ नजर आएगा। किसी गरीब को चार पैसे नहीं दिए तो भी ठीक है परन्तु बेवजह किसी को नसीहत मत देना। वाराणसी एक्सप्रेस में बैठकर सामने आए भिकारी को पैसा तो देते नहीं हो परन्तु आप उसे नसीहत जरूर देते हो कि, "हट्टे–कट्टे हो, काम करो, भीख क्यूँ माँगते हो?" परन्तु यही वाक्य अगर मैने आपको सुनाया तो आपको कैसा लगेगा? आप खुद को बड़े खानदान के समझते होंगे, आपका बड़ा बंगला होगा, परन्तु यहाँ आकर विडा लगाकर, आप बाबा के पास लगातार यह देना वह देना इस तरह, बिना कुछ सेवा किए माँगते हो, तो फिर आपमें व उस भिखारी में क्या अंतर है इसका विचार करो।

आप अपनी विचार पद्धति का अभ्यास कीजिए। फालतू व अनावश्यक विचारों की वजह से आपकी शक्ति फालतू में खर्च होती है। अपने घर के नजदीक से जा रही बस ने अगर मोड़ लिया व वह उलट गई तो कितने लोग जख़्मी हो सकते है इस तरह के फालतू विचारों को स्थान मत दो। एकाद कार या बस अगर तेजी से चल रही हो तो, "अरे, यह गाड़ी किसी से टकराएगी" इस तरह के शब्दों का उच्चार आप करते हो, इसके बजाय ऐसे समय आप बाबा से यह प्रार्थना कीजिए कि, इस ड्राईवर को सद्बुद्धि दीजिए। इसके कारण वह गाड़ी ठीक तरह से चलती हुई आपको नजर आएगी। आपका कुछ लोगों के साथ बनता है कुछ के साथ नहीं अथवा किसी से झगड़ा होता है परन्तु आपकी जिनके साथ नहीं बनती है उनके बारे में हमेशा सोचते रहकर उन्हें बुरा मत कहना। आपके घर में बाबा का अधिष्ठान है, आपकी नित्य साधना चल रही है, इसलिए आपके शब्दों के पीछे शक्ति है। इसलिए इस शक्ति के साथ आपने उसके लिए बुरा कहा तो वह और भी बुरा होगा मतलब अगर आपका पड़ोसी आपके माथे पर लाठी से प्रहार करने वाला होगा तो उसे आपने लगातार बुरा कहने से वह आपकी जान लेने इतना बुरा हो जाता हैं। इसी तरह से इन्सान के वजूद में (हड्डी पसलियों में) दुर्गुण समा जाते है यह ध्यान में रखो। बाबा का आशिर्वाद तीर के जैसा हैं, उसे कौन से निशाने पर मारना है यह आप तय करो। नदी पर जिस तरह बांध (dam) बनाते है, ठीक उसी तरह अपने जीवन में बाबा की कृपा का बांध बनाए। हर विषय की चर्चा पत्नी के साथ करना जरूरी नहीं है। उसके कारण आपके दिमाग को ज्यादा तकलीफ होने की सम्भावना है। प्रत्येक विचार आखिर में बाबा में विलीन होना चाहिए, इस तरह की आदत अगर आपने डाल ली तो आपकी जिंदगी सुखी होगी।

आजकल घर के बुजुर्ग सरकार की सदैव आलोचना करते रहते है। परन्तु जरा सोचिए कि, नेहरू अगर भाषण देने खड़े रहे तो एक लाख लोग इकट्ठा होंगे परन्तु आप खड़े रहे तो गली का एक कुत्ता भी नहीं आएगा। वैसे भी क्या आपको उनकी आलोचना करने का अधिकार (पात्रता) हैं? और इस तरह से नेता की सदैव आलोचना करने से, अपने नेता के सम्बन्ध मे परिवार के बच्चों के मन में क्या विचार आएंगे इसके बारे में क्या आपने सोचा है?आज रशिया में क्रुश्चेव्ह कुछ भी करते है तो भी वहाँ की आम जनता की भावना यह है कि वह उनका भला ही करने वाले है। इसलिए अगर वे बुरा करना चाहते है तो भी उनसे भला ही हो जाता है। क्योंकि उनके बुरे विचार को, 'यह अच्छा ही करेंगे' यह लाखों लोगों का विचार टकराता है। परन्तु हमारे यहाँ इससे उल्टी परिस्थिति है। पं. नेहरू अच्छा करने जाते है परन्तु

आप सबके इस तरह के विचारों की वजह से बुरा कर बैठते है। आप लोग जहाँ बैठे हो, वहाँ ग्रामदेवता का, उसके बाद महाराष्ट्र सरकार का व उसके बाद दिल्ली सरकार का ऐसे 3 वलय होते है। ये तीन अलग अलग शक्तियाँ है। मैं तुम्हें आशिर्वाद दूँगा परन्तु आखिर नोट छापने वाली दिल्ली सरकार हैं यह आप ध्यान में रखिए।

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के ज्येष्ठ नेता मुंबई के कामरेट डांगे, पंडित नेहरू या अन्य नेता इन्होंने एक प्रकार की शक्ति साथ में लेकर ही जन्म लिया है। वैसे भी नेताओं के बारे में यह भी होता है कि जैसे आज के महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री कुछ साल पहले प्रसिद्ध नहीं थे, परन्तु मुख्यमंत्री पद का स्वीकार करने के बाद उनके पीछे एक तेजोवलय, एक शक्ति आ गई। जैसे विवाह पूर्व की कन्या व विवाह के समय किसी के नाम का मंगलसूत्र व चूडियाँ पहनने वाली और उस वजह से चेहरे पर ज़गमगाता तेज आया है ऐसी कन्या, अलग ही होती है। इसी तरह की शक्ति लेकर लोग दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान होते है। उन्होंने यथायोग्य आचरण करके उस शक्ति का सही उपयोग किया तो उनसे देश का कार्य ठीक चलता है, नहीं तो कुछ काल के बाद वही शक्ति उन्हें उखाड़कर फेंक देती है। यह चक्र इस तरह ही चलेगा। पहले राजाओं की बहुत इज्जत थी परन्तु खुद के दुर्वचन से उन्होंने उसे खो दिया। आज दुनिया में एक ही राजा है और वह है इंग्लैड का राजा। उस देश के हर नागरिक के दिल मे उनके राजा के प्रति असीम श्रद्धा व आदर है। कुछ शतक पहले हमारे यहाँ भी पराक्रमी राजे हुए है। उस समय राजा को इतना मानते थे कि जिस वास्तु में राजा रहता था उस वास्तु की थोड़ी सी मिट्टी हर इंसान अपनी वास्तु (मकान) बनाते समय उसकी मिट्टी में मिलाने के लिए ले जाता था। पहले अग्रेंजों का राज्य था, उस समय यहाँ का पैसा उनकी पार्लियामेंट में जाता था परन्तु स्वराज्य मिलने के 12 साल बाद भी जब इंग्लैड की रानी हिंदुस्तान में आई तब हम मूर्ख लोग उसे जो चाहे दे बैठे और उस समय करोड़ो रूपयों की जायदाद बकिंगहॅम पॅलेस में गई।

यहाँ अनेक दिन आने के बाद व मुलाकातें सुनने के बाद आप, इस मार्ग के बाहर के अन्य लोगों ने लिखी किताबें पढ़ते है और तब उनके अनुभव और यहाँ मिलने वाले ज्ञान अमृत इन दोनों की तुलना करने का मोह आपको हो जाता है। परन्तु इस जगह आपको मार्गदर्शन विभूतियों के द्वारा होता है व विभूतियाँ इस विश्व के बाहर से मतलब ऊपर से आती है। इन्सान के बुद्धि की परम सीमा की मिसाल की तौर पर अगर पूरी दुनिया में अत्यंत बुद्धिमान डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् यह मान लिया जाए, तो उनके बुद्धि की सीमा जहाँ समाप्त होती है, वहाँ विभूतियों का कार्य मुलाकात शुरू होती है। इसी वजह से मुलाकात सुनते समय आप तन्मय हो जाते हो परन्तु बाद में उसमें से थोड़ा ही आपको याद आता है। इसके अलावा हमारी मुलाकात आपकी काया को नहीं परन्तु आत्मा को सम्बोधित होती है, यह ध्यान में रखें। दूसरों के ग्रंथ मत पढ़ना यह कहने के पीछे का उद्देश्य यह है कि आप उनके द्वारा लिखे अनुभव पढ़ते हो परन्तु वह पढ़ते समय उन लेखकों ने ना लिखे हुए परन्तु उनके दिमाग में मौजूद उल्टे सीधे विचारों का भी अप्रत्यक्ष परिणाम आप पर होता रहता है। इसी संदर्भ के तहत आप अपनी साधन पत्रिका दूसरे की साधन पत्रिका देखकर ना बनाए यह आपको बताया गया था। नोटिस बोर्ड पर लगाए हुए जरा से लेखन की नकल वहाँ खड़े होकर उतारते समय आपके पैर में दर्द होता है तो फिर कल अगर भारत की सीमा पर पहरा देने की जिम्मेदारी आप पर आई तो आप क्या करोगे? आप जिनकी किताबें पढ़ते हो उस लेखक के पास 1 रूपए का अनुभव होगा तो वाचक को वह पुस्तक पढ़कर ज्यादा से ज्यादा 2 आने का (12.4 प्रतिशत) अनुभव प्राप्त होगा यह ध्यान मे रहे। अपने कार्यकेंद्र पर कौने से रूट की (मार्ग की) बस आती है यह भी आपको पता नहीं और आप कहते हो कि हम अनेक किताबें पढ़कर ज्ञान प्राप्त करते है। यहाँ आकर सालो साल केवल आरती नहीं करनी है। आपके सामने बहुत बड़ा कार्य है। आप सबको एकत्रित करने का साधन याने आरती है।

आज इस पृथ्वी पर जागतिक शांतता कैसे प्रस्थापित करे इसके बारे मे चर्चा हो रही है और हमारे ऊपर के जगत में, बहुत ज्यादा अनावश्यक (अनैच्छिक) संतती पैदा हो रही है इस पर विचार चल रहा है। दिन में स्त्री पुरूष सम्बन्ध हो जाने से अनावश्यक (अनैच्छिक) संतती पैदा होती है। उसी तरह स्त्री पुरूष सम्बन्ध के दरम्यान अगर दोनो मे से एक भी नाखुश हो व जबरन सम्बन्ध बनाया गया हो तो भी उस सम्बन्ध से उत्पन्न संतती अनैच्छिक संतती होती है।

ऐसे संतती को नसीब होता ही नही है क्योंकि वह अकारण (बेवजह) इस दुनिया मे आया है। ऐसी संतती उम्र भर अंशाती में, तकलीफ में रहती है। उनको सही रास्ते पर लाने का सामर्थ्य केवल सद्गुरू के पास ही होता है। पुरूष का शरीर सूर्यतत्व से व स्त्री का शरीर चंद्रतत्व से युक्त होता है। सूर्य व चंद्र जब आमने सामने आते हैं उस समय यानी रात के 12 से 3 बजे के कालमें गर्भधारणा होने से अच्छी संतती निर्माण होती हैं।

गृहस्थी का तत्व सीखने के लिए यहाँ आइए। अगर गृहस्थी के ही पीछे पड़ोगे तो वह तुम्हें कुचल देगी। देवदेवता और ब्राम्हण को साक्षी रखकर जिसका हाथ तुमने थामा है उसे स्मशान में पहुँचाने के बाद भी शाम का खाना खाना ही पड़ता है, यह गृहस्थी और उसकी माया है। जब किसी के घर में नवजात बालक के आगमन से आनंद होता है उसी समय दूसरे घर में घर के मुखिया का स्वर्गवास होने से सब दुःखी होते है। जन्म मृत्यु इसी तरह चलने वाला है परन्तु प्रश्न यह है कि हम स्वयम् को इसमें कितना उलझा ले? शाम के 7 के समय बीवी बच्चे तो क्या मैं अपना खुद का भी नहीं हूँ यह विचार जब दृढ़ हो जाएगा, उस दिन आपके कदम केंद्र की तरफ मुड़ेंगें व सेवा होगी वरना आपसे सेवा होना कठिन है। इस जगह आपसे साधना करवाई जाती है। अन्य जगह ऐसी साधना कोई भी करवाते नहीं। वे ज्यादा से ज्यादा आपको कहेंगे कि नाक बंद कीजिए और प्राणायाम कीजिए व बाकी सब घर में कीजिए परन्तु सेवा मेरे सामने नहीं करनी क्योंकि सामने बिठाकर साधना करवा लेना इससे शिष्य का पाप स्वीकार करने की जिम्मेदारी आती है। यहाँ ये दो सत्पुरूष आपके बाबा और दादा आपका कुछ भी पाप अपनी झोली में लेने के लिए बैठे है।

साधना करने के लिए बैठने से पहले स्नान करना जरूरी है। स्नान के बाद अगर मूत्रविसर्जन के लिए गए हो तो साधना के लिए बैठने से पहले 10 बार गायत्रीमंत्र कहें। साधना करते समय सहज आसन में बैठे। उंगलियाँ व रीड की हड्डी सीधी रखकर ॐकार करें। हाथ की उंगलियाँ सीधी रखने से हृदय पर अच्छा परिणाम होता है। हमारे पूर्वज नियम से प्राणायाम, कुंभक, रेचक, पूरक इ. करते थे। इससे जो अतृप्त आत्माऐं वायुरूप से हमारे शरीर में प्रवेश करके अपनी इच्छाऐं पूरी कर लेते है, उनको ऊपर बताई क्रियाओं द्वारा हमारे पूर्वज साधना से पहले शरीर से बाहर निकाल सकते थे। यहाँ "ॐ श्री साईनाथाय नमः" इस गुरूमंत्र का उच्चार करते समय श्वांस लेते व छोड़ते समय यही क्रिया होती रहती है और इसके अलावा गुरूमंत्र का लाभ होता है। घर में अकेले साधना करना व सामुदायिक रीती से केंद्र पर साधना करना इनमें का फरक ध्यान में लो। पारायण का समय निश्चित हुआ व उसके तहत सूचनापत्र जारी किया गया कि निर्धारित समय पर पारायण शुरू होना चाहिए। उस समय हम चाहे दुनिया के किसी भी जगह हो तो भी उस समय आपको आशीर्वाद देने के लिए यहाँ आते हैं इसके बारे मे पूरे निश्चिंत रहो। परन्तु हम यहाँ से निकल जाने के पश्चात आपका पारायण शुरू होता है और फिर बहुत ही धीरे धीरे चलता है। पारायण दोहा या चौपाई के अनुसार पढ़ें। हर दोहे के बाद एक अंक लिखा होता है तब वहाँ एक क्षण रूकें। एक ही श्वांस में 2–3 दोहे ना पढें। अपना वाचन समाप्त होने के पश्चात सद्गुरू नामस्मरण करते बैठना, उस समय पास मे बैठे साधक का वाचन क्यूँ नहीं समाप्त हुआ इस इरादे से उसकी तरफ बार बार नहीं देखना क्योंकि उससे उसकी एकाग्रता भंग हो जाएगी। ऐसा कोई भी कभी भी ना करे।

हाजीबाबा ने तो ऊपर बताकर रखा है कि ये लोग 7 से 9 बजे तक साधना करेंगे। सद्गुरू के सामने बैठकर आप दो घंटे साधना करते हो इसका अर्थ आपका दिन 22 घंटों का हो जाता है। आपके घर में सोने के गहनों से लेकर खाद्य पदार्थों तक सब कुछ होता हैं परन्तु कल का क्या पता?यह जो उच्चार आप करते हो इसका कारण यह है कि कल आने वाले कर्म के बारे में आप नहीं जानते हो। दिन के 24 घंटे पूरे होने के बाद कर्म भेजने की आज्ञा चित्रगुप्त को है। परन्तु आपका दिन 24 के बजाय 22 घंटों का होने के कारण आपके पास आने वाला कर्म 22 हिस्सों मे ही बटकर आता हैं, यह सब कार्य सद्गुरू करते है। कर्म परम्परा से कोई भी मुक्त नहीं है। प्रत्यक्ष बाबा ने 25 साल किसी मौसम की पर्वा किए बिना अपने देह को कष्ट देकर कार्य किया, तब शिर्डी को आज का यह रूप प्राप्त हुआ है। फिर आपके पीछे की कर्म परंपरा कैसे छूटेगी?इस विश्व के चारो ओर एक महान शक्ति है, उसका एक बिंदू करके बाबा की शक्ति है व उस बिंदू से आपको शक्ति प्राप्त हो रही है। जिस तरह टाटा पॉवर हाऊस से बिजली सीधी आपके घर नहीं आती, क्योंकि उस

बिजली का फोर्स (दबाव) अधिक प्रमाण में होने के कारण आप उसे बरदाश्त नहीं कर सकते है इसलिए आपके घर के पास के बिजली के उपस्थान से आपको बिजली देना आपके हित में होता हैं। इसी तरह इस विश्व की आदिशक्ति 'हिरण्यगर्भ आप बरदाश्त नहीं कर सकते इसलिए इस विश्व का एक उपस्थानक याने बाबा, इनसे आपको शक्ति, आशिर्वाद प्राप्त होता है। बाबा ने लोक कल्याण के लिए 25 साल तपस्या की व अपने नाम की जगह एक शक्ति प्राप्त कर ली। उसके पश्चात बाबा ने वह शक्ति इस विश्व में छोड दी और परमेश्वर से प्रार्थना की कि जिस जगह, "ॐश्री साईनाथाय नमः" का उच्चार, निरपेक्ष भावना से होगा वहाँ मेरी शक्ति जाने दीजिए। इस तरह से बाबा ने अपने आपको इस कार्य से अलग कर लिया। 'जिसके मन में जैसा भाव, उसे वैसा अनुभव' यह इस गुरूपीठ की पम्परपरा है। हमारे इस पंथ में आहार पर बहुत निर्बंध है इसलिए हमारे पीछे ना आकर लोग औंरो के पीछे जाते है। प्रत्येक नाथ ने 12–12 साल केवल वायु का भक्षण किया है और आपको 12 घंटे कुछ मत खाना कहा तो आपसे बनता नहीं। इस मार्ग के बाहर के दूसरे सिद्ध साधकों की ओर आप देखोगे तो उनके पास खानापीना, कपडा और अन्य चीजों की भरमार होती है। वहाँ के लोग भरपेट मिष्ठान खाते रहते है व अपने सद्गुरू का गुणवर्णन करते रहते है परन्तु यह गुरूपीठ अलग है। यह सही मायने में गुरूपीठ है और दूसरे गुरूपीठ रोटी के पीठ हैं क्योंकि वहा ज्ञान प्राप्त करके उसका उपयोग आखिर मे रोटी कमाने के लिए किया जाता है।

एकाद सुनसान जगह कोई साधक जाता है व अल्प समय के अंदर वहाँ मठ, धर्मशाला खड़ी होती है। हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। भक्त लोग नोट उतारकर फेंकते रहते है, खानपान की भरमार होती है। इसका कारण यह है कि उस साधक ने सिद्धि प्राप्त कर ली होती हैं। परन्तु हमें जिन्दगी का साध्य निर्माण करना है। उस साधक ने साधना द्वारा एक तरह की शक्ति निर्माण की व उस शक्ति का याने ईश्वरी तत्व का उपयोग व्यावहारिक जीवन में किया। ऐसी शक्ति ने यानी 'सिद्धि' ने इस दुनिया में जहाँ जंगल था वहाँ यात्रा का माहौल निर्माण कर सकते है। परन्तु ऐसा साधक ईश्वर के दरबार में सबसे बड़ा गुनहगार माना जाता है। ऐसे साधक ने अगर इच्छा प्रगट की, कि इस जगह दो धर्मशालाऐं खड़ी हो तो तुरन्त वातावरण मे वैसी लहरें पैदा होती है व उसका असर वहाँ आने वाले भक्त पर होता है जिसके कारण वह भक्त 10 रू. की नोट रखे बिना वहाँ से आगे नहीं जाता। किसी जगह 100 लोगों को भोजन खिलाया जाए यह इच्छा अच्छी है। परन्तु उस के लिए वहाँ आने वालों मे से एक घी लाए, एक तेल लाए और बाकी दाल चावल इ. सामग्री लाए और खाना बने यह इच्छा नहीं, वासना है। इस तरह से निर्माण किया हुआ कार्य थोड़े समय तक ही चलता है। ऐसी जगह आने वाले भक्तों को चोरी करने का मोह होता है। क्योंकि ऐसे कार्य की नींव शुद्ध नहीं होती है। ऐसा कार्य याने समई (पीतल के दिए) का तेल व हमारा कार्य मतलब बिजली के बल्ब (Electric Bulb)। समई का तेल खत्म होते ही अंधकार हो जाता है। परन्तु बल्ब बिजली पर चलता है, जब चाहिए लगाऐं जब चाहिए बंद करें।

हमारे मार्ग में सिद्धि को कोई स्थान नहीं है। इसके बावजूद भी बाहर अन्य जगह क्या चल रहा है, इसकी आपको कल्पना हो, ज्ञान हो इसलिए हमने भी एक दो बार सिद्धि का अवलम्ब किया था। आपको स्मरण होगा कि चार साल पहले रामनवमी, दशहरा ऐसे त्योहारों के दिन आप लोगों ने अपनी आधी तनख़्वा इधर जमा की थी, क्योंकि उस समय हमने इस तरह की ही इच्छा प्रकट की थी। उस समय प्रत्येक वीरवार के दिन भक्त पेढ़े लाया करते थे। परन्तु आज किसी के घर नामकरण संस्कार हुआ तो ही वह पेढ़े लाता है। परन्तु हमनें यह एक दो बार ही किया उसके बाद फिर कभी भी नहीं किया। साधक ने सिद्धि प्राप्त कर ली व उसका उपयोग वह साधक करने लगा कि सब लोग उसे 'महाराज' बनाते है। फिर कोई उसके गले मे माला डालते है तो कोई उसके चरणों का तीर्थ लेते है। फिर ऐसे मोहपाश में वे साधक फँसते है और साधना छोड़ देते है और परिणामतः जीवन का साध्य निर्माण होने तक टिक नहीं पाते है। इस जाल में आप ना फँसे यही मेरा आपसे कहना है। मैं आपको असली रूपया बनाना चाहता हूँ, कही भी फैंको चलना ही चाहिए।

आज इतने दिन साधना करके आप अन्य साधकों के बराबर के हुए हो। इतना ही नहीं तो आपने और मैंने साथ बैठकर अगर एक से तीन तक के प्रसाद दो भक्तों को दिए तो उन दोनों भक्तों को समान ही लाभ होगा। हमने आपको इतना काबिल बनाया है। परन्तु पाँच हफ्ते बाद जब वह भक्त आकर बताएगा कि उसका काम हो गया है तो उस समय आपको अपना संतुलन बनाए रखना सीखना होगा। आपने पहले दिन यहाँ आकर जो सवाल मुझसे पूछे थे वही सवाल अब यहाँ आने वाला भक्त आप से पूछ रहा है। जीवन में सुख समाधान कैसे प्राप्त होगा इसका साधन ढूँढतें हुए वह यहाँ आता है। गतकाल में आपने भी यही किया है, ''बाबा पैसा दीजिए, मोटर दीजिए फिर मैं सुखी हो जाऊँगा।'' यह आपने उस समय बार बार कहा है। परन्तु आज इतने दिनों की साधना के बाद आपकी जीवन की ओर देखने की दृष्टि बदल गई है। आज आप जीवन का साध्य निर्माण करने में लगे हो इसलिए जीवन का साधन निर्माण करने वाले अनेक भक्तों की मनोकामनाऐं पूरी कर सकते हो।

हाल ही में एक सत्पुरूष वज्रेश्वरी के नित्यांनद स्वामी ने देहत्याग किया। उस समय वहाँ लाखों लोग इकट्ठा हुए, कई लोगों ने नोट जवाहरात लुटाए यह अखबार का वर्णन पढ़कर चकित मत होना। हमारे यहाँ अभी तक 10 लोग भी नहीं आते इसलिए बुरा मत मानना। मैं यहाँ लोगों को इकट्ठा करने नहीं आया हूँ यह ध्यान में रहे। हमारे सामने कुछ अलग कार्य है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि, हवा के झोके से कचरे का जो एक कण गलती से आपकी आँखों में जा सकता है, उस कण के जितना भी गलत मार्गदर्शन यहाँ नहीं किया जाएगा, या हमारे अपने स्वार्थ के लिए आपके विश्वास व श्रद्धा का फायदा यहाँ उठाया नहीं जाएगा। मैं तो बार बार यह कहता हूँ कि मुझे अंधश्रद्धा से नमस्कार मत करना। अभी भी आपको कही भगवान मिलते होंगे तो आप यहाँ से कभी भी जा सकते हो। अभी भी एकाद हिमालय पर बैठा साधु आपको परमेश्वर दिखाता होगा तो आप शौक से वहाँ जा सकते हो। परन्तु एक बार आपका यह मार्ग निश्चित हुआ तो आप दूसरी ओर मत देखना।

हमने आपके इस जन्म के सब पाप अपनी झोली में लिए है। इतना ही नहीं, हमने आपके सात जन्मों का हवाला भी दिया हैं। इसका कारण एक ही है कि हमें आपसे काम करवा लेना है। आपसे इतनी साधना करवाई वह इसी एक इच्छा के खातिर। परन्तु इतना सब कुछ करने के बावजूद भी आप सोते रहते हो, कभी कुछ एकाद शब्द हमने आपको कहा तो आप यहाँ आना ही बंद कर देते हो। आपके इस बर्ताव से हमें कितनी यातनाऐं होती है, इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। केवल वो ही उसकी कल्पना कर सकता है, जिसे इसका अनुभव हुआ है जैसे कि एक सितार वादक, जिसकी महफिल का पूरा समा बंधा है और वह खुद पूरी एकाग्रता और हुनर दाँव पर लगाकर वाद्य से सुर सजा रहा है और उसके सितार के निनाद से वातावरण गूँज उठा है ऐसे समय अगर अचानक सितार की तार टूट जाएगी तो, तब उस सितार वादक की जो अवस्था होगी, उसे जो यातनाऐं होगी उनका अनुभव करने वाले सितारवादक को ही हमारी यातनाओं का अंदाजा होगा। परन्तु ऐसी परिस्थिति में भी हम हार नहीं मानेगें। अरे, अगर तुम नहीं तो तुम्हारा बेटा और वो भी नहीं तो तुम्हारे पोते से काम करवाए बिना हम नहीं रहेंगे, इतनी सबूरी हम लोगों के पास है। आज कुछ भक्तों को मैं बहुत बोलता हूँ इसलिए गुस्सा आता है। परन्तु एक बात ध्यान मे रखो हम विभूति ऊपर से आते है क्योंकि हमे ऊपर की शक्ति से आज्ञा है जिसका हमने पालना करना है और वैसे आपने इस दुनिया में आकर ऐसा क्या किया है कि, हम विभूति लोग आप के बारे में भले बुरे चार शब्द कहे! अगर आज्ञा के अुनसार हमने यहाँ आना बंद किया तो उसके बाद हम आए इसलिए आपने बेशक 300–350 साल पैर के एक अंगूठे पर खड़ा रहकर तपस्या की तो भी हम एक शब्द भी आपसे नहीं बोलेंगे, हम विभूति इतने परम कोटी के है। आज्ञा है इसलिए आपसे बातें करते है। परन्तु आज्ञानुसार हमने आना बंद करने के बाद आपने सिर पटक के जान भी दी तो भी हम आपसे नहीं बोलेंगे। उस समय आपको हमारे ये शब्द याद आएंगे परन्तु तब समय बीत चुका होगा।

आज आपकी खरी कसौटी है। क्योंकि आपको, मुझे व समाज को जवाब देना पड़ रहा है। आपके परिवार के हर

मनुष्य का सुधरना आवश्यक है। कल आने वाला हर भक्त बाबा को मिल नहीं पाएगा। हम उन्हें बताएंगे कि आपको सुख समाधान चाहिए तो इस परिवार मे जाईये। इस प्रकार से हम उन्हें आपके नाम बताएंगे। आज हर बात में आपका मनोनिग्रह (मन को काबू में) है परन्तु कल यहाँ आने वाले सब लोग मजबूरी से अथवा प्रवाह में बहते आएंगे। इस जगह आप पैसे का व्यवहार बिल्कुल सही रखें। व्यवहार सही ना रखने के कारण कई कार्य मिट्टी में मिल गए है। कुछ भक्त कहते है कि हमें रेस में कौन से घोड़े पर पैसे लगाने है यह बताईये और अगर हम 1 लाख रूपये जीत गए तो 10,000 रूपये दादा को देंगे। परन्तु उनकी समझ में यह नही आता है कि इस तरह का सौदा करने के बजाय क्या हम सीधे दादा को ही पैसे नही दे सकते? जिसका पैसा इस गद्दी पर चढ़ने वाला होगा, उसी का ही पैसा यहाँ रखा जाएगा। अन्यथा जेब में पैसे रखकर आओगे तो भी वह रखना भूलकर वैसे ही घर वापस चले जाओगे। आपने 'अल्प बचत' में जमा की हुई रकम यह एक तरह का बम (bomb) है जो समय आने पर अलग अलग संस्थाओं मे डालना है ताकि उनका कार्य यथायोग्य होता रहे। सद्भावना से, सत्प्रवृती से दिया हुआ एक पैसा भी लाख रूपयों के बराबर होता है। परन्तु गलत तरीके से कमाए हुए लाखों रूपए भी कौड़ी के कीमत के (बिना कीमत के) है और इस तरह से कमाए हुए पैसे से एकाद गरीब बच्चे को दूध दिया तो उसे दस्त लग जाएंगे। परन्तु इसके बदले निश्चय पूर्वक सिगरेट छोड़कर उसकी कीमत के पैसे अल्पबचत में जमा करके किसी विद्यार्थी को पढ़ाई के लिए दिए तो उसकी जिन्दगी बदल जाएगी। इतना ही नहीं तो अत्यंत मुश्किल समय में भी उस विद्यार्थी को किसी ने धमकाया कि, ''सिगरेट पीओ, नहीं तो गर्दन काट दूँगा'' तो भी वह सिगरेट नही पीएगा, यह अल्पबचत के पैसे का प्रभाव है! आजकल समाज की स्थिति बिगड़ती जा रही है इसके लिए जिम्मेदार कौन तथा इसे रोकने वाला कौन यह बड़ा सवाल है। हमें विधायक (रचनात्मक) कार्य की नींव ऊपर बताए जैसी डालनी है।

अगर आज आपसे पूछा कि, आपका भगवान कौन सा है, त्यौहार, धर्म अथवा उपासना का दिन कौन सा है? तो आपके पास उसके लिए निश्चित जवाब नहीं होगा। हफ्ते के काफी दिन उपवास के दिन होते है। वीरवार को क्यों उपवास रखते हो तो वह दिन दत्तात्रय महाराज का है इसलिए। दत्तात्रय महाराज का दिमाग एकदम ठंडा परन्तु आपका दिमाग वीरवार को एकदम गरम क्योंकि पेट में अन्न नहीं है। दूसरे धर्म के लोग राजा से रंक तक क्रिसमस या ईद के दिन अच्छे कपड़े पहनते है, इत्र लगाते है। परन्तु आपके त्यौहार बारह महीने चलते रहते है। गणपति उत्सव के नाम इकट्ठा किया चंदा अगर किसी योजना के लिए दिया तो कोई भी योजना पैसे के अभाव से बंद नहीं होगी। आज आपने ईश्वर को चौराहे पर ला रखा है। आज जहाँ मूत्रालय होता है उस जगह पर आप गणपति की स्थापना करते हो। आपके यहाँ विवाह धर्मशाला से लेकर राजवाडे तक कही भी सम्पन्न होता है। आज हर धर्मकृत्य में आप देवदेवताओं को आह्वान करने के लिए सुपारी रखते हो। मेरा कहना यह है कि सुपारी रखकर उस पर श्री गणेश जी को आह्वान मत कीजिए क्योंकि आज के गणपति कल सरोते के नीचे सुपारी करके काटे जाते है। अष्टदिक्पाल के तौर पर आठ सुपारियाँ रखी जाती है। कल चांद पर जाने वाले इन्सान के नाम से भी सुपारी रखी जाएगी। आह्वान के तौर पर उन सुपारियों पर अक्षता फेंकते रहना ठीक नहीं है। अगर आपको बुलाना हो तो आवाज देते ही आप आ जाते हो। आपको बुलाने के लिए आपके मस्तक पर अक्षता फेंकने की जरूरत नहीं पड़ती है। तो फिर भगवान को आह्वान करके बुलाते समय ऐसा क्यों करते हो? क्या ईश्वर भावना से किए आह्वान से नहीं आएंगे? वे अवश्य आएंगे यह मैं दावे के साथ कहता हूँ। विवाह के समय आप वधू, वर के सिर पर अक्षता फेंकते रहते हो। क्या केवल 'सावधान' कहने से वे जागृत होंगे? विवाह के हजारों रूपयों के खर्च मे यह 2–4 किलो चावलों का खर्च ध्यान में नहीं आता। परन्तु इसमें एक परिवार का एक समय का अन्न पैरों तले जाता है यह आपके ध्यान मे नहीं आता है।

गतकाल में वेदों का अभ्यास करने वाले व यथायोग्य धर्म कृत्य करने वाले विद्वान थे। वे यह सब कर्त्तव्य की भावना से करते थे और उसके बदलें गाँव के सब लोग उन्हें उनकी जरूरत की चीजें देते थे। परन्तु कुछ विघ्न संतोषी लोगों से यह देखा नहीं गया और उनके कहने पर उन विद्वानों को उनकी दैंनदिन जरूरत की चीजें गांव के अन्य लोगों से मिलना बंद हो गया। इस वजह से एक समय कर्त्तव्य की भावना से किए हुए काम अब उपजीविका का साधन करके करना आवश्यक हो गया व इसलिए धर्मकार्य में सुपारियाँ आ गई। हमें फिरसे वैदिक धर्म को लाना है। वैदिक धर्म के पंडितों को चरितार्थ का साधन उपलब्ध करा देना चाहिए इसलिए आप उन्हे सवा पाँच रू. दक्षिणा दीजिए परन्तु बताईये कि सुपारी रखकर उसपर देवदेवताओं का आवाहन मत करना।

इस मार्ग मे ना कोई लाडला है ना कोई अप्रिय। कार्य के आंरभ मे जो आशीर्वाद दिया वह सबके लिए हैं। मान

लीजिए कि कल वैकुंठ से हवाई जहाज आ गया तो मैं हेमकुंज केंद्र पर श्री तांबे के पास काम करने वाला नौकर धोंडू आने तक उसे रोक के रखूँगा क्योंकि जब धोंडू यहाँ पोछा लगाता है तब उसके बाद आप साधना के लिए बैठते हो। यहाँ आकर आप कुछ भी प्रश्न पूछते हो परन्तु हमें विचार करके आशीर्वाद देना होता है। एकाद भक्त कहता है कि मुझे 'निरासक्त' (आसक्ती रहीत) कीजिए। परन्तु फिर उसकी पत्नी का क्या करें? इसके अलावा जब आपने जन्म लिया तब उसके पीछे आपके माता पिता की कितनी आसक्ती थी और उस आसक्ती का साक्षात फल यानी आप, तो फिर आप निरासक्त कैसे हो सकते हो?ऐसे यह शब्द जो आप बाहर सुनते हो उनका उपयोग यहाँ मत करना।

आप सोचते हो कि मेरी मुलाकातें ध्वनिमुद्रित करके रखे परन्तु मैं इतना सस्ता नहीं हूँ कि जिसके घर में टेपरेकॉर्डर है वो किसी भी समय टेपरेकॉर्डर चला कर मेरी मुलाकात सुनें। आपके गुरू दादा ने मुलाकात सुनने की इच्छा रखना याने 'आवाज ने खुद अपनी आवाज सुनने जैसा है।' मेरी मुलाकातें पुस्तक रूप से प्रसिद्ध करके मैं अपनी कीमत 4–8 आने जितनी कम नहीं करूँगा। उन बाबा का आपने बहुत फायदा लिया मानो 'उन सत्पुरूष को तुमने खा डाला।' मुझे प्रेम मे फाँसकर तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। ईसा मसीहा व मो. पैंगबर के निधन के कुछ समय बाद 'बाईबल' व 'कुराण' यह ग्रंथ उनके अनुयायीयों ने लिखे तब स्वाभाविकतः उन्होंने अपना मसाला उसमें डाला। कल आप भी यही करेंगे यह मैं पूरी तरह से जानता हूँ इसलिए मैंने पहले ही 'साधनपत्रिका' छपवाई है। **<u>आज की साधनपत्रिका यह भावी कालकी सम्पूर्ण मानवजाति का धर्मग्रंथ होगा इतना यह मूल्यवान है।</u>** आप मेरे गले में मत पड़ना बहुत कठिन बात है वह। परदे के बाहर निकली हुई हाथी की पूँछ और घीस (बड़े चूहे) की पूँछ ये दोनों पूँछ एक जैसी लगती है। परन्तु एक जैसे दिखने वाली पूँछे देखकर परदे के पीछे दो घीस होंगी, इस अंदाज से अगर हाथी की पूँछ पकड़ी तो परदे के पीछे गजराज है यह तुम्हें मालूम पड़ेगा। यह गजराज लोगों के आशीर्वाद की वजह से दिन ब दिन बड़ा हो रहा है और अगर आपने उसके साथ ज्यादा गड़बड़ की तो वह आपको आगे खींच कर मोक्ष को भेजे बिना नहीं रहेगा यह ध्यान में रहे। इस कार्य की दिशा 350 साल पूर्व ऊपर के जगत में निश्चित हुई उस समय इन्सान नाम का जो प्राणी है कि जिसके हित के खातिर यह कार्य प्रारम्भ होने वाला है वो कैसा है व उसके साथ कैसे पेश आना चाहिए यह निश्चित करने में हमारे 12 साल बीत गए। इसलिए हम आपको पूर्णतः पहचानते है यह ध्यान में रखो। आप कायदे से बर्ताव करना सीखें। अगर कायदे से बर्ताव करते समय आपकी मृत्यु हुई तो आपकी हड्डियाँ जोड़कर मैं तुम्हें फिर से जिंदा करूँगा। परन्तु अगर बेकायदा बर्ताव करने से आपकी जान गई तो मेरे जैसा कसाई नही, उस समय मैं कहूँगा कि ये लकड़ियाँ जल्दी जलाने के लिए ले जाओ।

यहाँ 24 घंटे पहले नाम दिया जाए ऐसा नियम है। परन्तु इस नियम को अनदेखा किया जा रहा है। आपने 24 घंटे पहले नाम दिया तो ऊपर चित्रगुप्त को पता लगता है और वह अपनी सूची निकालकर आपका नाम देखते है। नाम देने वाले व्यक्ति ने कुछ धर्माचरण, देवतार्जन किया है, या ऐसे ही ईश्वर को कोसते हुए गालियाँ देते हुए जन्म बिताया है यह चित्रगुप्त देखते है। अगर आपने अपने प्राप्त जन्म में कुछ अच्छा किया हो तो ही आप दूसरे दिन यहाँ कार्यकेंद्र पर समय पर आ जाओगे और बाबा से मिलोगे। परन्तु अगर आपने जन्म भर गालियाँ दिए बिना कुछ नहीं किया होगा तो यहाँ आते समय आपकी ट्रेन अथवा बस छूट जाएगी, आपको यहाँ आने में देर हो जाएगी और आपको बाबा नहीं मिलेंगे। जिस समय एकाद भक्त इस जगह आता है उस समय हमारा प्रसाद उसके घर में होता है व जिस समय वो भक्त अपने घर में होता है उस समय हमारा प्रसाद यहाँ होता हैं। आप नए व्यक्ति को यहाँ लाने का बहुत प्रयत्न करते हो परन्तु वह नहीं आता क्योंकि पूर्वकर्म का उदय हुए बिना वह यहाँ नहीं आ सकेगा। यहाँ आने वाले भक्त यहाँ से वापस लौट जाने के लिए भी आप ही कारण हो। कामकाज के दिन यहाँ सवेरे 8–9 तक वातावरण प्रसन्न व उत्साह से परिपूर्ण होता है क्योंकि नए भक्त बाबा को मिलने के लिए आतुर व उत्सुक होते है। हर भक्त सोचता है आज बाबा मिलेंगे व मेरा काम हो जाएगा। इस विचार से उत्पन्न लहरें यहाँ आघात करती रहती है इसलिए यहाँ 9 बजे तक वातावरण उत्साहपूर्ण होता

हैं। परन्तु उसी समय आप जैसे पुराने सेवकों के विचार एकदम उल्टे होते है। हमने आपके लिए सब कुछ किया है तो भी आप संतुष्ट नहीं हो इसलिए, "बाबा अब तक हमारा काम क्यों नहीं करते", इस विचार मे आप सदैव उलझे रहते हो। आपके ये विचार आपने आज तक यहाँ समय समय पर बाबा का कृपाशिर्वाद लेने के कारण, नए आने वाले भक्तों के विचारों की अपेक्षा, किसी खापीकर मोटे हुए चूहे के जैसा होता है। और उस विचार की लहरें, जिन्हें अब तक बाबा का आशिर्वाद नहीं मिला है ऐसे नए भक्तों के कमजोर विचारों को टकराते है। परिणामतः उन्हें भी लगता है कि हमारा काम यहाँ नहीं होगा, और फिर वे यहाँ वापस नहीं आते हैं। आप एक बार सेवक करके यहाँ आने के बाद आपको मानअपमान भूलकर यहाँ कोई भी काम आत्मीयता के साथ (लगन से) करना चाहिए। जितना महत्वपूर्ण बाबा की फोटो की पूजा करना है उतना ही महत्वपूर्ण बाहर भक्तों के जूते समेट कर रखना, झाडू लगाना, पानी सिंचना इ. काम है। आपको किसी सेवक ने कुछ सुझाव दिया तो उसका पालन करने के लिए आप नाराज होते हो, क्योंकि वह सुझाव दूसरे सेवक ने दिया है और आप दोनों सेवक हो फिरभी आपका मन उसके बारे मे साफ नहीं होता है। परन्तु यहाँ कहा गया हर एक शब्द बाबा का शब्द है और उसका पालन होना ही चाहिए यह धारणा रखो। यहाँ आने वाले भक्त का सुख सुनकर भावनाओं से गद–गद ना होना अथवा उसका कितना भी दुःख हो तो भी वह सुनकर व्याकुल अथवा विचलित मत होना। दृष्टि निरपेक्ष होगी तो ही आप कुछ काम कर सकोगें। एक सेवक को नए केंद्र पर नियुक्त किया था। वहाँ आई एक महिला का बेटा बीमार होने के कारण उस सेवक ने उसे उदी दी। दो दिन बाद उस महिला ने कार्यकेंद्र पर आकर कहा कि उसका बेटा अब ठीक हो गया है। यह सुनकर सेवक को आनंद होना स्वाभाविक था परन्तु आनंद की सीमा लांघकर, वह आनंद अहंकार में विलीन हुआ। वास्तव में उसने, "बाबा मुझसे ऐसी ही सेवा लेते रहिए" इस तरह की प्रार्थना करनी चाहिए थी, "परन्तु बाबा से हमने छीन लिया" इस तरह का अंहकार उसमें निर्माण होकर उसका संतुलन गया, वैसा आपका भी संतुलन जा सकता है, इसलिए आप जागरूक रहे। बच्चे के उदी लेने से वह ठीक हो गया यह सुनकर आपको खुशी क्यों हुई?आप इस जगह कर्त्तव्य निभाने के लिए आए हो। अगर आपने कर्त्तव्य की भावना से उदी दी होती तो बच्चा ठीक होने तक आप रोज उसकी माता से उसके बारे में पूछते परन्तु यही बात आप भूल गए और चार दिन बाद माता ने बच्चे के सुधार का हाल बताने के बाद कृतार्थ होकर आनंद में खो गए। यही अन्य जगह होता रहता है। इस तरह की घटना यहाँ नहीं होगी इसकी सावधानी आपको रखनी चाहिए।

"मेरे साईबाबा की महिमा निराली", यह आरती आप रोज गाते हो परन्तु क्या इसका अर्थ आप समझ पाए हो? बाबा को सीधे सवाल पूछकर आपका काम कभी नहीं होगा। आपको सबसे पहले यहाँ आने वाले भक्तों की सेवा करनी चाहिए। फिर उसके पश्चात ही बाबा आपका काम करेंगे। आने वाले भक्तों का काम करने के बाद बाबा आपको आशीर्वाद देने के लिए आते हैं परन्तु तब आप स्थान पर नहीं होते हो। आपके पहले अपने परिवार के लोगों को संवेदना देने के लिए कहा है। अगर आप बाहर के लोगों को संवेदना दोगे तो उन्हें तुरंत लाभ कैसे होगा? क्योंकि उनके यहाँ बाबा का अधिष्ठान होगा ही यह कह नहीं सकते और इसके अलावा उनके आचार विचार अनुकूल नहीं होंगे व इसलिए आपने उन्हें संवेदना देने के बाद उनमें थोड़े समय में सकारात्मक फरक ना आने के कारण आप निराश होंगे तो वह योग्य नहीं है। पाप पुण्य विवाद्य प्रश्न है। यह मतलब पाप और वह मतलब पुण्य इस तरह से पाप और पुण्य ये दोनों अलग–अलग बोतलों मे भरकर क्या दिखा सकते है? इस तरह के सवालों पर आप अपनी राय ना दें। जो काम करने से समाधान प्राप्त होता है वह पुण्य और जिस काम से दूसरों को दुःख पहुँचता है वह पाप है। यह कार्य सबने एकजुट होकर करना है। यहाँ व्यक्तिपूजा की कोई गुंजाइश (अवसर) नहीं है। अगर आपने दादा पर भरोसा रखा तो आपका काम 25 प्रतिशत हो जाएगा, बाबा पर विश्वास रखा तो 50 प्रतिशत और समिति पर विश्वास रखा तो 100 प्रतिशत काम हो जाएगा।

मैं गले में फूलों की माला नहीं पहनवाता, पेढ़े भी नहीं लेता क्योंकि इस विश्व की जिस शक्ति ने फल फूल निर्माण किए है उसी शक्ति ने हमें जन्म दिया है। इसलिए फल फूल हमारे बंधुबाधव है इसलिए हमें गले में माला डलवाने का अधिकार नहीं है। आज 100 लोग दादा को माला पहनाते है, प्रणाम करते है, इत्र लगातें है, यह देखकर कल जब तुम्हें कार्य के लिए भेजा जाएगा, तब स्वाभाविकतः आपको भी माला पहनाई जाए ऐसा लगेगा। परन्तु आप में से हर एक

के लिए इतने लोग कहाँ से लाए?इस दूर दृष्टि से मैंने आज ही यह सब बंद कर दिया। एक केंद्र पर हो गई घटनाऐं दूसरे केंद्र पर मत बताना। 'मेरी भूमिका' इस विषय पर जो निबंध लिखने के लिए कहा था वह मैंने फाड़ दिया, ऐसे एक सेवक ने दूसरे सेवक को बताया, जिस वजह से दूसरे केंद्र के भक्तों के मन में डर पैदा हो गया। वास्तव में आपने आपकी भूमिका के सम्बन्धा में लिखा ही नहीं था तो वह फाड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। मैनें केवल आपके दिए हुए कागज फाड़ दिए। आप सब के विचार एक जैसे होने के लिए और 12 साल लगेंगे। जीवन में गणित का प्रयोग करना सीखें। ऑफिस से घर लौटने का समय शाम 6 बजे होगा और 5 मिनट देर हो गई तो पत्नी का पहला प्रश्न होता है कि कैसे देर हुई?पत्नी के रूप मे आपने जिसका स्वीकार किया है वह इतनी आतुरता से आपकी राह देखती है तो क्या आपने कभी यह हिसाब लगाया है कि आपके सेवा करने का व्रत स्वीकारने के बाद, बाहर की दुनिया के कितने लोग उत्कंठता से आपकी राह देखते होंगे? आपके घर में चीनी के डिब्बे में चिटियाँ आती है। पृथ्वी घूमती है और इसी तरह दुनिया की हर एक वस्तु घूमती रहती है। चीनी का डिब्बा स्थिर है, ऐसा आपको लगता है तो भी उसे एक गति होती है और उस गति से निर्माण होने वाली लहरों के कारण चीटियों को वह डिब्बा मिल जाता है और उनका कुछ हिस्सा आपके पास होता है इसलिए वे आपके पास आती है। अन्यथा चीनी जमीन पर दो दिन पड़ी रहेगी तो भी वहाँ चीटियाँ नहीं आती हैं। आपने अनेक बार यह देखा होगा कि हमारे शरीर पर चढ़ गई चीटी हम केवल दूर करते है परन्तु आप चींटी को आसानी से रौंद देते हो। जिस समय आप कीड़े मकोंडो को मारना नहीं, यह सीखोगे तब इन्सानों को नहीं मारोगे।

गुरूआज्ञा इस शब्द का अर्थ अगर आपकी समझ मे आता तो आप गुरू की आज्ञा यूँ ही (कॅज्युअली) नहीं लेते, उस पर गंभीरता से विचार करते। आज्ञा का उच्चार होते ही तुरन्त उसका पालन होना चाहिए परन्तु आप 4–5 दिन देरी करते हो तो उस समय तक हमारी आज्ञा विश्व में भ्रमण करती रहती है। इस जगह का सूचनापत्र हो अथवा प्रसाद की निराकरण पत्रिका हो तो उस सम्बन्ध में किसी को मार्गदर्शन करते समय उसमें थोड़ा सा भी बदलना मत। 'स' की जगह 'त' भी मत करना। अपना दिमाग मत चलाना क्योंकि उसके कारण घोटाला होने की संभावना होती है। एक सेवक ने अपना दिमाग चलाकर किसी भक्त को 11 शुक्रवार करने के लिए कहा परन्तु आज उसे खुद को तकलीफ हो रही है। आसन पर बैठकर मेरे सेवक ने किसी शब्द का उच्चार किया तो वह शब्द सच करने के लिए मैंने मेरी शक्ति उसके पीछे खड़ी कर दी। यह एक बार हुआ व मैने वह संभाल लिया, परन्तु अगर आप लगातार ऐसे करते रहे तो परिस्थिति कठिन हो जाएगी। एक भक्त के दाँत में दर्द था इसलिए मैंने उसे अजवाइन के पानी से गरारे करने के लिए कहा। वास्तव में अजवाइन गरम होने के कारण उसके दाँत में और दर्द होना चाहिए था। परन्तु यहाँ 'अजवाइन के पानी से गरारे करो' यह गुरूआज्ञा थी। अजवाइन दाँत ठीक नहीं करता तो उसके पीछे की आज्ञा दाँत ठीक कर देती है। मैं डॉक्टर की तरह कौन सा रोग है इस पर विचार करके दवा नहीं बताता, तो मेरे सामने भक्त बैठने के बाद जो चीज मेरे सामने आती है, वह आपको लेने के लिए कहता हूँ। कल मैं आपको अपने परिसर के पेड़ के निकट की मिट्टी भी पेट में लेने के लिए कहूँगा। उस भक्त ने बचपन में माँ ने दी हुई अजवाइन हर बार थूक दी थी इसलिए उसने फेंका हुआ वह पदार्थ ही मैंने उसे लेने के लिए कहा। पिछले हफ्ते एक को इत्र का फोया लाने के लिए कहा था। उसके पैसे किसी के पास उधार थे, तो वे पैसे आने के बाद इत्र की एक बोतल ही बाबा को देंगे यह सोचकर चुप बैठ गया। परिणामतः उसके पैसे नहीं आए और इत्र भी नहीं आया। मुझे इत्र की कोई बड़ी बोतल नहीं चाहिए थी, इत्र का एक फोया काफी था क्योंकि गुरूआज्ञा वैसी थी। गुरू अकाल में ही माँगते है! समृद्धि में कोई भी देगा। यहाँ जो कुछ पैसा देने का आपने सोचा है वह बिना चूके उसी दिन देने का प्रयत्न कीजिए। किसी से 20 रूपए आने है तो वह रकम मिलने के बाद गद्दी पर (कार्यकेंद्र पर) 5 रू. रखेंगे इस तरह से सोच लिया तो 20 रू. की जगह 10 रू. ही आते है यह कुछ लोगों का अनुभव है।

'मुलाकात' यह एक महान साधना है। आप हर रोज सद्गुरू के सामने बैठकर साधना करते हो परन्तु आपको आशीर्वाद का लाभ नहीं होता है क्योंकि साधना के लिए आप काया (शरीर) से बैठते हो परन्तु वाचा व मन से कहीं और होते हो। मन प्रसन्न हो, घर में कोई बीमार नही हो, मेहमान नहीं आए हो, तो ही मुलाकात के लिए बैठे क्योंकि अगर घर में माँ बीमार होगी तो मुलाकात में चित्त की स्थिरता नहीं होगी। शरीर से गद्दी पर (कार्यकेंद्र पर) बैठकर बार बार मन से घर जाने की अपेक्षा और इस तरह के बर्ताव से यहाँ के वातावरण को भंग करने की अपेक्षा घर में रहना अधिक उचित होगा। हम मुलाकात द्वारा आपको आशीर्वाद देते है। मुलाकात के लिए कितने लोग उपस्थित है इसका विचार करके, उस प्रमाण मे हमें ऊपर से शक्ति लानी पड़ती है। सामने बैठे भक्तों में कितने भक्त विचार पूर्वक बैठे है व कितने अविचार से बैठे है यह देखकर, अगर ऊपर से लाई शक्ति कम पड़ती हो तो हम ऊपर से अधिक शक्ति लाते है। अगर सामने बैठे भक्त अव्यवास्थित रीति से बैठे होंगे तो आरम्भ में 5–7 मिनट इधर उधर की बातें करके फिर हम मुलाकात को आरम्भ करते हैं। हम विभूतियों के यह 5–6 मिनट व्यर्थ जाते है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? और उसकी कमी आप पूरी कैसे करोगे? मुलाकात के दरम्यान हम आपके शरीर के अशुद्ध द्रव्य लेते हैं और ऊपर से लाया शुद्ध द्रव्य आपके शरीर में

डालते रहते हैं। आप सबने मुलाकात में बैठने से पहले, 'सब लोगों को मुलाकात का लाभ हो' यह प्रार्थना बाबा से करनी है। मुलाकात शुरू होने के बाद शक्ति का एक स्तंभ शरीर के पास खड़ा रहता है। जो आपके आसन की जगह से लेकर ऊपर अंतरिक्ष तक होता है। मैं जब बोलता हूँ तब उस स्तंभ पर लहरें आघात करती रहती है और वे लहरें शक्ति के साथ आपकी चमड़ी के ऊपरी स्तर पर परिणाम करती रहती है और इस तरह से धीरे धीरे उनका परिणाम आपके शरीर के अंदर के हिस्सों पर होता है। कई बार मुलाकात बहुत लंबी चल रही है ऐसा आपको लगता है परन्तु उसी समय किसी भक्त को रात के 9 बजे अपघात होने वाला होता है इसलिए मुलाकात 9.30 बजे तक चलती है। मुलाकात में मैं आपको गुस्से से बोलता हूँ ऐसा आपको लगता है व आप नाराज होते हो परन्तु यदि आप 'क्ष' नाम के व्यक्ति हो तो भी एक बार आपने इस द्वार के अंदर प्रवेश किया तो आपने स्वयम् को भूलना चाहिए, तो ही आपको कुछ लाभ होगा। जब मैं आपको बोलता हूँ तब मेरे सामने कोई व्यक्ति नहीं तो पंचमहाभूतों से बना कंकाल होता है और उसमें उस क्षण कोई एक विकार बहुत ज्यादा बढ़ा है और वह अगर इस पल में निकाल नहीं दिया तो वह उसके लिए व कार्यपद्धति के लिए विघातक होगा यह ध्यान में आते ही मैं उसे जड़ से उखाड़ देता हूँ। परन्तु इसका अर्थ आप यह लगाते हो कि मैं आपको बोलता हूँ, गुस्सा करता हूँ। परन्तु यह जन्म पाकर आपने आजतक ऐसा क्या किया है कि हम विभूति आपके बारे में चार भले बुरे शब्द कहे?अगर मैं किसी से उसके दुर्गुण के बारे में बोलता हूँ तो वो तुरन्त जवाब देता हैं कि मैंने ऐसा नहीं किया। परन्तु हम भूत, वर्तमान व भविष्य जानते है यह भूलना मत। मैंने जिन दुर्गुणों का जिक्र किया होगा वह आजतक आपके जीवन में नहीं हुआ होगा, इस पल में नहीं हुआ होगा तो भी आगे के जीवन में आपसे ऐसा बर्ताव नहीं होगा इसकी निश्चिति क्या आप दे सकते हो? आपका ऐसा कुछ ऋणानुबंध होगा कि जिसके कारण आपके पुरखों की कोई बुरी घटना या कृत्य कल आपके जीवन में आने वाला होगा, तो उसका उच्चार हम आज ही करते है और उससे आपको मुक्त कर देते है। हम इस तरह का प्रसाद देते रहते है। इसलिए ऐसे समय आप बाबा से प्रार्थना करें कि ऐसा कृत्य मेरे हाथों से नहीं होने दीजिए। इसके लिए आप उनका आशीर्वाद माँग लीजिए। एक बार एक भक्त से मैंने कहा कि, ''क्यूँ रे बुढ़े, क्या तेरी कमर अकड़ गई है?'' उसे मेरे प्रश्न का उद्देश्य समझ में नहीं आया, कर्म के आघात से वह बहुत परेशान हुआ था उस संदर्भ मे मैंने वह शब्दप्रयोग किया था। परन्तु उसने कमर दर्द का शब्दिक अर्थ लिया व मुझे वैसा जवाब दिया। परन्तु उसके परिणामवश यह हुआ कि उसके ऊपर से आने वाले कर्मों ने कहा कि क्या अभी तक तेरा अभिमान नहीं गया है? तो फिर देख ही लो हमारा आघात! मैं इस तरह से जब आपके कर्मों का विमोचन करता हूँ तब गलत उत्तर देकर आप उन कर्मों को फिरसे खींच लेते हो। मैं जो कुछ बोलता हूँ उसे आप प्रसाद समझकर स्वीकार करते चलो। पूछा तो ही जवाब दो अन्यथा मुहँ मत खोलो। एक भक्त से बाबा ने कहा कि, तुम शिर्डी जाते समय तीन नौकर लेकर जाते हो। वहाँ बाबा का सेवक बनकर जाने के बजाय नौकरों का मालिक बनकर गए उसके कारण आज एक भी नौकर नहीं रख सकते हो इसका विचार क्या कभी तुमने किया है?शिर्डी को जाने के बाद वहाँ मिला अन्न, प्रसाद के तौर पर ग्रहण करने की अपेक्षा, भोजनालय में जाकर आप स्पेशल खाना मँगवाते हो। परिणामस्वरूप आज आपकी परिस्थिति दिन प्रतिदिन मुश्किल हो रही है परन्तु उस भोजनालय के मालिक ने तीन मकान बनाए हैं। बाबा ने आगे कहा कि, यह तुम्हारा वर्तन सबके सामने बताकर आज मैंने आपका 'गुरूऋण' उतार दिया। आपको सब कुछ दिया है परन्तु अभी भी उतनी कृपा का लाभ नहीं हुआ ऐसे आपको लगता है। कुछ दिन पहले अजमेर शरीफ बाबा का 'खिचड़ी' का प्रसाद लाकर वह आपके घर के अनाज में मिलाने के लिए आपको बताया था उस दिन से आपके घर का सब अन्न प्रसाद हो गया हैं। परन्तु आपके घर में अन्न बहुत ज्यादा बनाने के कारण वह रोज भिखारी या नौकर को दिया जा रहा है। इससे आगे अन्न का एक कण भी व्यर्थ नहीं जाएगा इसका ध्यान रहे क्योंकि अब वह बाबा का प्रसाद है।

इस गुरूपीठ की भाषा का अभ्यास होना चाहिए। आप जो दुकान से खरीदकर यहाँ लाते हो वह नारियल होता है परन्तु एक बार उसका पूजन होकर वह सेवा के लिए आपको वापस दिया जाता हैं तब वह नारियल नहीं तो प्रसाद होता हैं। आप अज्ञानवश नारियल की कितने दिन पूजा करें यह जो पूछते हो वह सही नहीं है। प्रसाद के लिए नारियल यह उच्चार करने से प्रसाद का लाभ आधा हो जाता है। आप कहते हो कि, बाबा को पेढ़ा दिखाए, फूल चढ़ाए परन्तु ये सब चीजें बाबा ने ही निर्माण की है इसलिए आपका यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि बाबा ने ही निर्माण की चीजें उन्हें देना उचित नही है। 'मेरे विचार बाबा के लिए निश्चित हैं' यह कहने से पहले आप स्वयम् निश्चित हो जाईये। बाबा आपके पहले ही निश्चित होकर आपकी राह देख रहे हैं।

कोई भी चीज बंद नहीं होती है। ऑफिस आज बंद है, यह कहने के बजाय आज छुट्टी है यह कहना चाहिए। कोई चीज खरीदनी थी परन्तु पैसे खत्म हो गए इसलिए नहीं खरीदी ऐसे मत कहना। इसके बजाय उसके लिए पैसे की सहुलियत नहीं थी इस तरह का शब्द प्रयोग करें। आपकी मनस्थिती बिगड़ जाने के कारण, ''हे नारायण, आप मुझे

छुटकारा दीजिए'' ऐसा कहते हो परन्तु इस तरह के उद्‌गारों का बुरा परिणाम होता है यह मत भूलना। ''हे नारायण, छुटकारा दो'', यह उच्चार होने के कारण वह देवता आपके द्वार पर आकर खड़ी होती है और किसी कारणवश अगर आप बीमार पड़ गए तो कुछ विपरीत ही हो जाता है। ''बाबा, सब कुछ आप को सौंपा है'', यह कहने के बजाय, ''बाबा, आपकी झोली में आया हूँ'' ऐसा कहें। सौंपना का अर्थ घर के नौकर पर कोई काम सौंपना ऐसा होता है। गुरू के सम्बन्ध में बोलते समय सावधानी पूर्वक बोलना सीख लीजिए।

आज यह परम पूज्य जिलानी बाबा का निवेदन (मुलाकात) आपके सामने पढ़ा है, उससे तथा ऐसे अनेक पुण्य विभूतियों की अनेक मुलाकातों द्वारा गुरूभक्तों को जो मार्गदर्शन हो रहा है वह इसलिए हो रहा है कि दरियादिल वंदनीय दादा जी ने आज अपनी निराकार अवस्था में, कल अपनी सगुण अवस्था में तथा पिछले अनेक जन्मजन्मों में सदैव सर्व मानवजाति के उद्धार के लिए निरंतर कार्य किया है।

पसायदान और शक्तिपीठ इनका एकरूपत्व करने का नामुमकिन कार्य जो आज मुमकिन हुआ है इसके बारे में हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि इसके लिए वंदनीय दादा जी ने अपने जीवन का किनकिन रूपों में त्याग किया है। क्या आज हम वंदनीय दादाजी के उपकारों का बदला गुरूदक्षिणा देकर चुकता कर सकते हैं?या क्या हम इस काबिल है कि हम वंदनीय दादा जी को गुरूदक्षिणा दे सकते हैं?नहीं! इसके लिए हम सबने यह एक ही बात अपने आचरण में लानी चाहिए जो कि हमें वंदनीय दादाजी ने उनके जीवन काल में मुलाकात तथा निवेदनों द्वारा बताई है कि, ''मैंने आजतक आप लोगों को अपने सहवास में रखकर जो सिखाया है उसका प्रत्यक्ष अनुभव जो आप लोगों ने किया है, उसके अनुसार अब आपने आने वाले भक्तों को वह सिखाना है और सेवक तैयार करना है, यह अब आपका काम है।'' क्योंकि परम पूज्य बाबा और पुण्य विभूतियों के स्थापित इस गुरूमार्ग का यह गुरूकार्य निरंतर सुचारू रूप से जारी रखना यह अब आप सबकी जिम्मेदारी है, जो आपने आचरण के साथ मनःपूर्वक निभाने से, आप जो दैनंदिन प्रार्थना में परम पूज्य बाबा से माँग करते है कि, 'उपकारों का बदला अपकारों से ना हो, ऐसी बुद्धि हे दयानिधान परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को आप दीजिए।' उसके लिए परमपूज्य बाबा से आपको प्रसाद प्राप्त होकर प्रतिसादरूप प्रेरणा का लाभ प्राप्त होगा और गुरूकार्य के कार्यकेन्द्रों पर आपके माध्यम द्वारा आने वाले भक्तों को निरंतर गुरूकृपा का लाभ होता रहेगा।

इस शुभ अवसर पर हम वंदनीय दादा जी से यही प्रार्थना करते है कि, आपने हमें जो खुले दिल से झोली भर के दिया है, उसी तरह हमने वह आने वाले भक्तों को देते समय हमारी तथा आने वाले भक्तों की झोली सदैव भरी रहे और गुरू कृपा से यह गुरूकार्य, गुरूशक्ति से हम सबके माध्यमों द्वारा निरंतर जारी रहे यही आपके चरणों में प्रार्थना है।

जन्म जन्म का सेवक
श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था
''साई निकेतन''

।। शुभं भवतु।।

कुरूक्षेत्र में अर्जुन की भगवान श्री कृष्ण जी से प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय बस एक यह, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
जो जग में रहूँ, तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे गुण–दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो इन चरणों का पुजारी बनूँ।
इस पूजक की इक–इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
जब–जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
मुझमें तुममें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।अब।।

अपनी इस छोटी सी लौं को शमां ने तो मुक्कमल माना
दिया हुनर ये मालिक ने है इसी बात को ना पहचाना
जो अंधेरा अपने नीचे देखा तो और मगरूर हुई
अपने से नीचो को ही देखकर अंह से चूर हुई
रात के अंधेरे में रह कर ये भरम फरमाया
ना तो दिन का उजाला ही देखा, ना उस मालिक का ज़लाल उसे नजर आया
बस इस गुरूर में ही पिघल, उमर रही फक्त एक रात
और ना रही वो रोशनी जिसने बनाई थी उसकी औकात
वजूद मिट गया कोई ना रहा नामों निशां
चंद मोम के कतरे ही कतरे है अब उसका बंया
जूगनू जो उसके जलवे को ही दर्शाता है
रोज चमकता है नई रोशनी वो पाता है
जो अक्स उसकी रोशनी का तुम बन जाओगे
हमेशा उजाले में मालिक के जगमगाओगे।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible

सद्गुरु

तत्व बोध

SADGURU

TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 31

अंक - 117 | नवम्बर, दिसम्बर - 2012

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

ॐ

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः ॥

॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः ॥

प्रेरणा-2 (प्रतिमा)